INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

HANDWRITTEN NOTES

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

RAS

प्रारंभिक परीक्षा हेतु

भाग-5

भारत का भूगोल + अर्थव्यवस्था + विश्व भूगोल

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS

(Rajasthan Administrative Service)

प्रारंभिक परीक्षा हेतु

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

भाग – 5

भारत का भूगोल + अर्थव्यवस्था + विश्व भूगोल

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**RAS (Rajasthan Administrative Service) Pre.**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**Rajasthan State and Subordinate Services Combined Competitive Exams**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 8233195718

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Order Link - https://bit.ly/ras-pre-notes

WhatsApp Link- https://wa.link/6r99q8

Contact Us - 8233195718, 9694804063,7014366728,8504091672

मूल्य : ₹	संस्करण : नवीनतम (2022)

भारत का भूगोल

1. सामान्य परिचय 1

2. भारत की स्थिति व विस्तार 3

3. प्रमुख स्थलाकृतियाँ 12

- पर्वत, पठार एवं मैदान

4. मानसून तंत्र व वर्षा का वितरण 39

5. प्रमुख नदियाँ एवं झीलें 55

6. भारत के वन एवं वन्य जीव, वनस्पति 72

7. प्रमुख फसलें 79

- गेहूँ, चावल, कपास, गन्ना, चाय एवं कॉफी

8. प्रमुख खनिज 91

- लौह अयस्क, मैंगनीज, बॉक्साइट एवं अभ्रक,

9. ऊर्जा संसाधन 97

- परम्परागत एवं गैर-परम्परागत

10. प्रमुख औद्योगिक प्रदेश 106

11. राष्ट्रीय राजमार्ग एवं प्रमुख परिवहन गलियारे 122

आर्थिक अवधारणायें एवं भारतीय अर्थव्यवस्था

1. अर्थशास्त्र की मूलभूत अवधारणायें 135

2. बजट एवं बजट निर्माण 143

- बजट 2022-23

3. बैंकिंग 156

4. लोक वित्त 186

5. वस्तु एवं सेवा कर 192

6. राष्ट्रीय आय 198

7. संवृद्धि एवं विकास का आधारभूत ज्ञान 208

8. लेखांकन – अवधारणा, उपकरण एवं प्रशासन में उपयोग 211

9. स्टॉक एक्सचेंज एवं शेयर बाजार 224

10. राजकोषीय एवं मौद्रिक नीतियाँ 232

11. सब्सिडी एवं लोक वितरण प्रणाली 236

12. ई-कॉमर्स 248

13. मुद्रास्फीति – अवधारणा, प्रभाव एवं नियंत्रण तंत्र 255

14.भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्र 263

15.आर्थिक समस्याएं एवं सरकार की पहलें 271

16.मानव संसाधन एवं आर्थिक विकास 280

- वैश्विक खुशहाली सूचकांक

17.गरीबी एवं बेरोजगारी 286

18.केंद्र सरकार की योजनाएँ 297

- आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए प्रावधान

विश्व का भूगोल

1. प्रमुख स्थालाकृतियाँ 303

- पर्वत
- पठार
- मैदान
- मरुस्थल

2. प्रमुख नदियाँ एवं झीलें 318

3. कृषि एवं इसके प्रकार 327

4. प्रमुख औद्योगिक प्रदेश 338

- राजस्थान में मरुस्थलीकरण
- वनोन्मूलन
- ठोस अपशिष्ट
- ग्रीनहाउस प्रभाव
- जलवायु परिवर्तन
- ओजोन परत अवक्षय

भारत का भूगोल

अध्याय – I

सामान्य परिचय

- **अर्थ एवं परिभाषा :-** "ज्योग्राफी" (Geography) अंग्रेजी भाषा का शब्द है , जो ग्रीक (यूनानी) भाषा में **'ज्योग्राफिया '** (Geographia) शब्दावली से प्रेरित है । इसका शाब्दिक अर्थ ''पृथ्वी का वर्णन करना है।''
- ज्योग्राफिया शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग यूनानी विद्वान **'इरैटॉस्थनीज'** (Eratosthenes 276-194 ई . पू .) ने किया था , इसके पश्चात विश्व स्तर पर इस पृथ्वी के विज्ञान विषय को ज्योग्राफी (भूगोल) नाम से जाना जाने लगा ।
- यूनानी एवं रोमन अधिकांश विज्ञानों ने पृथ्वी को ' चपटा ' या ' तस्तरीनुमा ' माना, जबकि भारतीय साहित्य में पृथ्वी एवं अन्य आकाशीय पिण्डों को हमेशा ' गोलाकार ' मान कर वर्णन किया । इसलिए इस विज्ञान को ' भूगोल ' के नाम से जाना जाता है ।
- भूगोल 'पृथ्वी तल' या भू तल (Earthsurface) का विज्ञान है । इसमें स्थान (Space) व उसके विविध लक्षणों (Variable Characters) , वितरणों (Distributions) तथा स्थानिक सम्बंधों (Spatial Relations) का मानवीय संसार (World of man) के रूप में अध्ययन किया जाता है ।
- ''पृथ्वी तल'' भूगोल की आधारशिला है , जिस पर सभी भौतिक मानवीय घटनाएँ एवं अन्तः कियाएँ सम्पन्न होती रही हैं । ये सभी क्रियाएँ ' समय ' एवं ' स्थान ' के परिवर्तनशील सम्बन्ध में घटित हो रही हैं।
- पृथ्वी तल का भौगोलिक शब्दार्थ बहुत व्यापक है , जिसमें स्थल मण्डल , जल मण्डल , वायुमण्डल , जैव मण्डल , पृथ्वी पर सूर्य तथा चन्द्रमा का प्रभाव एवं पृथ्वी की गतियों का वैज्ञानिक आंकलन किया जाता है ।

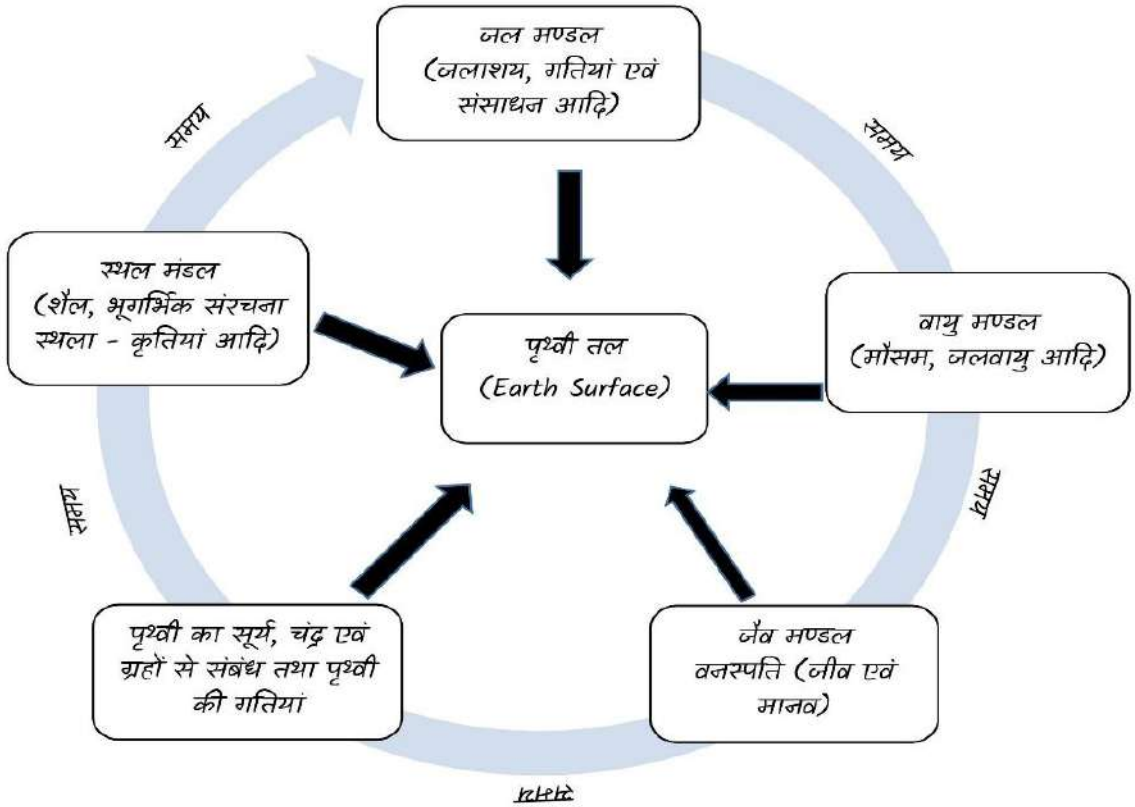

भूगोल में भौतिक एवं मानवीय पहलूओं और उनमें पारस्परिक सम्बंधों का अध्ययन किया जाता है । इसलिए प्रारम्भ से ही भूगोल विषय की दो प्रमुख शाखाएँ उभर कर आयी (i) भौतिक भूगोल (ii) मानव भूगोल

- कालान्तर में विशिष्टीकरण (वर्ष 1950 के पश्चात) बढ़ने से इन दो शाखाओं की अनेक उप शाखाएँ विकसित होती गयी , जिससे विषय सामग्री एवं विषय क्षेत्र में समृद्धि आती गई ।
- भूगोल की प्रमुख शाखाएँ एवं उप शाखाएँ निम्नलिखित हैं . -

भौतिक भूगोल	मानव भूगोल
1. भू गणित (Geodesy)	1.आर्थिक भूगोल (Economic Geography)
2.भू भौतिकी (Geophysics)	2. कृषि भूगोल (Agricultural Geography)
3.खगोलीय भूगोल (Astronomical Geog.)	3. संसाधन भूगोल (Resource Geography)
4.भू आकृति विज्ञान (Geomorphology)	4. औद्योगिक भूगोल (Industrial Geography)
5. जलवायु विज्ञान (Climatology)	5. परिवहन भूगोल (Transport Geography)
6.समुद्र विज्ञान (Oceanography)	6. जनसंख्या भूगोल (Population Geography)
7.जल विज्ञान (Hydrology)	7. अधिवास भूगोल (Settlement Geography) (i) नगरीय भूगोल (Urban Geography) (ii) ग्रामीण भूगोल (Rural Geography)
8.हिमनद विज्ञान (Glaciology)	8. राजनीतिक भूगोल (Political Geography)
9.मृदा विज्ञान (Soil Geography)	9. सैन्य भूगोल (Military Geography)
10. जैव विज्ञान (Bio - Geography)	10. ऐतिहासिक भूगोल (Historical Geography)
11. चिकित्सा भूगोल (MedicalGeography)	11. सामाजिक भूगोल (Social Geography)
12. पारिस्थितिकी /पर्यावरण भूगोल (Ecology / Environment Geography)	12.सांस्कृतिक भूगोल (Cultural Geography)
13. मानचित्र कला (Cartography)	13. प्रादेशिक नियोजन(Regional Planning)
	14. दूरस्थ संवेदन व जी.आई.एस.(Remote Sensing and G.I.S.)

• अभ्यासार्थ प्रश्न

1. भूगोल की किस शाखा में तापमान, वायुदाब, पवनों की दिशा एवम् गति,आर्द्रता, वायुराशियाँ, विक्षोभ आदि के विषय में अध्ययन किया जाता है , वह है-

(अ) खगोलीय भूगोल

(ब) मृदा भूगोल

(स) समुद्र विज्ञान

(द) जलवायु विज्ञान

उत्तर :- (द)

2. भूगोल की दो प्रमुख शाखाएँ हैं

(अ) कृषि भूगोल एवं आर्थिक भूगोल

(ब) भौतिक भूगोल एवं मानव भूगोल

(स) पादप भूगोल एवं जीव भूगोल

(द) मौसम भूगोल एवं जलवायु भूगोल

उत्तर :- (ब)

3. किस भूगोलवेत्ता ने भूगोल (Geography) शब्दावली का सर्वप्रथम उपयोग किया ?

(अ) इरेटॉस्थेनीज

(ब) हेरेडोइस

(स) स्ट्रैबो

(द) टॉलमी

उत्तरः- (अ)

4. पृथ्वी की आयु मानी जाती है

(अ) 4.8 अरब वर्ष

(ब) 5.0 अरब वर्ष

(स) 4.6 अरब वर्ष

(द) 3.9 अरब वर्ष

उत्तर :- (स)

अध्याय – 2

भारत की स्थिति व विस्तार

- आर्यों की भरत नाम की शाखा अथवा महामानव भारत के नाम पर हमारे देश का नामकरण भारत हुआ ।
- प्राचीन काल में आर्यों की भूमि के कारण यह आर्यावर्त के नाम से जाना जाता था ।
- ईरानियों ने सिन्धु नदी के तटीय निवासियों को हिन्दू एवं इस भू - भाग को हिन्दुस्तान का नाम दिया ।
- रोम निवासियों ने सिन्धु नदी को इण्डस तथा यूनानियों ने इण्डोस व इस देश को इण्डिया कहा । यही देश विश्व में आज भारत के नाम से विख्यात है ।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

भारत एशिया महाद्वीप का एक देश है, जो एशिया के दक्षिणी भाग में स्थित है तथा तीन ओर समुद्रों से घिरा हुआ है। पूरा भारत उत्तरी गोलार्द्ध में पड़ता है।

- भारत का अक्षांशीय विस्तार 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' उत्तरी अक्षांश तक है।
- भारत का देशान्तर विस्तार 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पूर्वी देशान्तर तक है।
- भारत का क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किमी. (1269219.34 वर्ग मील) है।
- कर्क रेखा अर्थात् 23½ उत्तरी अक्षांश हमारे देश के लगभग मध्य से गुजरती है यह रेखा भारत को दो भागों में विभक्त करती है (1) उत्तरी भारत , जो शीतोष्ण कटिबन्ध में फैला है तथा (2) दक्षिणी भारत , जिसका विस्तार उष्ण कटिबन्ध है।

कर्क रेखा भारत के आठ राज्यों क्रमशः गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, प. बंगाल, त्रिपुरा व मिजोरम है।

NOTE- राजस्थान की राजधानी जयपुर, त्रिपुरा की राजधानी अगरतल्ला व मिजोरम की राजधानी आइजोल कर्क रेखा के उत्तर में तथा शेष राज्यों की राजधानियाँ दक्षिण में स्थित है।

NOTE – मणिपुर कर्क रेखा के सर्वाधिक उत्तर में स्थित है ।

प्रश्नः- निम्न में से कौन सा भारत का राज्य कर्क रेखा के उत्तर में स्थित है ? (RAS PRE. 2015)

(1) त्रिपुरा **(2) मणिपुर**

(3) मिजोरम **(4) झारखण्ड**

उत्तर :- (2)

NOTE- कर्क रेखा राजस्थान से न्यूनतम व मध्यप्रदेश से सर्वाधिक गुजरती है।

- भारत सम्पूर्ण विश्व का लगभग 1/46 वाँ भाग है।
- क्षेत्रफल के अनुसार रूस , कनाडा , चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्राज़ील व ऑस्ट्रेलिया के बाद भारत का विश्व में 7वाँ स्थान है ।
- यह रूस के क्षेत्रफल का लगभग 1/5, संयुक्त राज्य अमेरिका के क्षेत्रफल का 1/3 तथा ऑस्ट्रेलिया के क्षेत्रफल का 2/5 है।
- भारत का आकार जापान से नौ गुना तथा इंग्लैण्ड से 14 गुना बड़ा है ।
- जनसंख्या की दृष्टि से संसार में भारत का चीन के बाद दूसरा स्थान है।
- विश्व का 2.4% भूमि भारत के पास है जबकि विश्व की लगभग 17.5% (वर्ष 2011 के अनुसार) जनसंख्या भारत में रहती है।
- भारत के उत्तर में नेपाल, भूटान व चीन, दक्षिण में श्रीलंका एवं हिन्द महासागर, पूर्व में बांग्लादेश, म्यांमार एवं बंगाल की खाड़ी तथा पश्चिम में पाकिस्तान एवं अरब सागर है।
- भारत को श्रीलंका से अलग करने वाला समुद्री क्षेत्र मन्नार की खाड़ी (Gulf of Mannar) तथा पाक जलडमरूमध्य (Palk Strait) है।
- प्रायद्वीप भारत (मुख्य भूमि) का दक्षिणतम बिन्दु - कन्याकुमारी के पास केप कोमोरिन (तमिलनाडु) है।
- भारत का सुदूर दक्षिणतम बिन्दु - इन्दिरा प्वाइंट (ग्रेट निकोबार में है)।
- भारत का उत्तरी अन्तिम बिन्दु- इंदिरा कॉल (लद्दाख) है ।
- भारत का मानक समय (Indian Standard Time) इलाहाबाद के पास नैनी से लिया गया है। जिसका देशान्तर 82°30 पूर्वी देशान्तर है। (वर्तमान में मिर्जापुर) यह ग्रीनविच माध्य समय (GMT) से 5 घण्टे 30 मिनट आगे है। यह मानक समय रेखा भारत के 5 राज्यों क्रमशः उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा व आंध्रप्रदेश है।
- कर्क रेखा व मानक रेखा छत्तीसगढ़ राज्य में एक दुसरे को काटती है।
- भारत की लम्बाई उत्तर से दक्षिण तक 3214 किमी. तथा पूर्व से पश्चिमी तक 2933 किमी. है।
- भारत की समुद्री सीमा मुख्य भूमि, लक्षद्वीप और अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह की तटरेखा की कुल लम्बाई 7,516.6 कि.मी है जबकि स्थलीय सीमा की लम्बाई 15,200 किमी. है। भारत की मुख्य भूमि की तटरेखा 6,100 किमी. है।

भारत की तटीय / समुद्री सीमा = तट रेखा की लम्बाई 7516.6 मुख्य भूमि की तटरेखा 6,100 किमी. है।

कुल राज्य = 9 [i. पश्चिमी तट के राज्य- गुजरात (राज्यों में सबसे लंबी तट रेखा), महाराष्ट्र, गोवा (राज्यों में सबसे छोटी तट रेखा), कर्नाटक व केरल ii. पूर्वी तट के राज्य प. बंगाल, ओडिशा, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु]
कुल केंद्र शासित प्रदेश= अंडमान निकोबार (सर्वाधिक), लक्षद्वीप, दमन व दीव तथा (न्यूनतम) पुदुचेरी

- भारत के 16 राज्य व 2 केंद्र शासित प्रदेश अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाते है ।

देश की चतुर्दिक सीमा बिन्दु
• दक्षिणतम बिन्दु - इन्दिरा प्वाइंट (ग्रेट निकोबार द्वीप) • उत्तरी बिन्दु- इन्दिरा कॉल (लद्दाख) • पश्चिमी बिन्दु- गोहर माता (गुजरात) • पूर्वी बिन्दु- किबिथु (अरुणाचल प्रदेश) • मुख्य भूमि की दक्षिणी सीमा- कन्याकुमारी के पास केप कोमोरिन (तमिलनाडु)

स्थलीय सीमाओं पर स्थित भारतीय राज्य	
पाकिस्तान (4)	गुजरात, राजस्थान, पंजाब, जम्मू और कश्मीर, लद्दाख
अफगानिस्तान (1)	लद्दाख

चीन (5)	लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश
नेपाल (5)	उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल, सिक्किम
भूटान (4)	सिक्किम, पश्चिम बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश
बांग्लादेश (5)	पश्चिम बंगाल, असम, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम
म्यांमार (4)	अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम

पड़ोसी देशों के मध्य सीमा विस्तार	
भारत - बांग्लादेश सीमा	4096.7 किमी.
भारत-चीन	3488 किमी.
भारत-पाक सीमा	3323 किमी.
भारत - नेपाल सीमा	1751 किमी.
भारत - म्यांमार सीमा	1643 किमी.
भारत - भूटान सीमा	699 किमी.
भारत – अफगानिस्तान	106 किमी. (वर्तमान में POK में स्थित है)

❖ **पड़ोसी देशों के साथ भारत का सीमा विस्तार व सीमा संबंधी विवाद**

1. भारत – बांग्लादेश

✓ भारत के 5 राज्य पश्चिम बंगाल(सर्वाधिक), असम (न्यूनतम), मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम बांग्लादेश के साथ सीमा बनाते हैं।

✓ भारत का त्रिपुरा राज्य बांग्लादेश से तीनों ओर से घिरा हुआ है ।

✓ भारत के असम राज्य बांग्लादेश के साथ दो बार सीमा बनाता है ।

✓ **जीरोलाइन-** बांग्लादेश व भारत के मध्य की सीमा जीरो लाइन कहलाती है।

बांग्लादेश व भारत के मध्य विवाद

✓ **तीस्ता नदी विवाद**

इस नदी का उद्गम सिक्किम हिमालयी क्षेत्र के पाहुनरी ग्लेशियर से होता हैं । यह सिक्किम, पश्चिम बंगाल तथा बांग्लादेश की महत्वपूर्ण नदी मानी जाती है। भारत के सिक्किम एवं पश्चिम बंगाल की यह जीवन रेखा मानी जाती है। यह नदी दक्षिण की ओर प्रवाहित होते हुए बांग्लादेश की जमुना (ब्रह्मपुत्र) में मिल जाती है। यह सिक्किम एवं पश्चिम बंगाल की सीमा भी बनाती है। 1815 में नेपाल के राजा और ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच तीस्ता नदी के पानी को लेकर समझौता हुआ। इस समझौते के बाद नेपाल ने तीस्ता पर बड़ा नियंत्रण अंग्रेजों (ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी) को सौंप दिया। यही नियंत्रण आजादी तक बना रहा। 1971 के बाद (बांग्लादेश के निर्माण के बाद) तीस्ता जल को लेकर पुनर्विचार की मांग उठी। भारत एवं बांग्लादेश के बीच तीस्ता नदी को लेकर पहली बार एक तदर्थ समझौता हुआ था। इस समझौते के तहत बांग्लादेश को 36 प्रतिशत और भारत को 39 प्रतिशत पानी के उपयोग का अधिकार दिया गया तथा 25 प्रतिशत जल का आवंटन नहीं किया गया। 2011 में प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ढाका दौरे पर गये और तीस्ता के जल के बंटवारे को लेकर एक नये फार्मूले पर सहमति भी बनी। लेकिन पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के विरोध की वजह से इस पर हस्ताक्षर नहीं हो सका था।

✓ **फरक्का बाँध विवाद**

भारत और बांग्लादेश के बीच सन् 1996 में गंगा जल संधि हुई थी। यह संधि भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री एच.डी. देवेगौड़ा और शेख हसीना के मध्य हुई। इस बाँध का निर्माण वर्ष 1975 में पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में गंगा नदी पर किया गया था। जो संधि दोनों देशों के बीच हुई उसके तहत अगर पानी की उपलब्धता 75,000 क्यूसेक बढ़ती है तो भारत के पास 40,000 क्यूसेक पानी लेने का अधिकार है और अगर फरक्का बांध में 70,000 क्यूसेक से कम पानी है तो फिर बहाव को दोनों देशों के बीच बांटा जाएगा। इस समझौते की अवधि 30 साल की है जो 2026 में पूर्ण हो जाएगी।

✓ **तिपाईमुख परियोजना विवाद**

मणिपुर में 6 हजार करोड़ रुपए की लागत से बराक नदी पर प्रस्तावित तिपाईमुख पनबिजली

परियोजना का विरोध पड़ोसी देश बांग्लादेश करता रहा है।

✓ **फेनी नदी विवाद**

यह नदी भारत बांग्लादेश की सीमा पर स्थित है। इसका उद्गम दक्षिणी त्रिपुरा ज़िले में स्थित है। इस नदी के जल के बँटवारे का विवाद काफी समय से लंबित है।

✓ **चकमा और हाजोंग शरणार्थी समस्या**

चकमा और हाजोंग शरणार्थी मूलतः पूर्वी पाकिस्तान के चटगांव हिल ट्रैक्ट्स (Chittagong Hill Tracts) के निवासी थे। परन्तु कर्नाफुली (Karnaphuli) नदी पर बनाए गए कैपटाई बांध (Kaptai dam) के कारण जब वर्ष 1960 में उनका क्षेत्र जलमग्न हो गया तो उन्होंने अपने मूल स्थान को छोड़कर भारत में प्रवेश किया।

दरअसल, चकमा बौद्ध हैं, जबकि हाजोंग हिन्दू हैं। इन दोनों जनजातियों ने बांग्लादेश में कथित तौर पर धार्मिक उत्पीड़न का सामना किया तथा असम की लुशाई पहाड़ी (जिसे अब मिज़ोरम कहा जाता है) के माध्यम से भारत में प्रवेश किया।

इसके पश्चात् भारत सरकार द्वारा अधिकांश शरणार्थियों को उत्तर-पूर्व सीमान्त एजेंसी (जिसे अब अरुणाचल प्रदेश कहा जाता है) में बनाए गए राहत शिविरों में भेज दिया गया।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, केवल अरुणाचल प्रदेश में ही 47,47। चकमा लोग रह रहे हैं।

चकमा और हाजोंग जनजातियाँ मुख्यतः पूर्वोत्तर भारत, पश्चिम बंगाल, बांग्लादेश और म्याँमार में पाई जाती हैं।

✓ **न्यू मूर द्वीप**

भारत और बांग्लादेश के बीच बंगाल की खाड़ी में स्थित न्यू मूर द्वीप को लेकर दोनों के मध्य विवाद है। इस द्वीप को भारत में न्यू मूर या पुर्बाशा कहा जाता है जबकि बांग्लादेश में इसे दक्षिण तलपट्टी के नाम से जाना जाता है। वर्तमान में यह द्वीप लगभग जल मग्न हो गया है।

✓ **तीन बीघा गलियारा**

2. भारत – चीन

✓ भारत के 4 राज्य हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम (न्यूनतम), अरुणाचल प्रदेश व 1 केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख (सर्वाधिक) चीन के साथ सीमा बनाते हैं।

✓ **मैकमोहन रेखा –**

चीन व भारत के मध्य की सीमा रेखा है। इसका निर्धारण अप्रैल, 1914 में किया गया था।

✓ **सीमा विवादः**

लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल-

LAC एक 3488 किलोमीटर लंबी सीमा रेखा है जो भारत और चीन को अलग करती है। भारत और चीन के बीच यह विवादित सीमा, जिसे वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) के रूप में भी जाना जाता है, को तीन क्षेत्रें में विभाजित किया गया है: पश्चिमी क्षेत्र (लद्दाख, कश्मीर), मध्य क्षेत्र (उत्तराखंड, हिमाचल) और पूर्वी क्षेत्र (सिक्किम, अरुणाचल)।

✓ **दलाई लामा और तिब्बतः** भारत ने दलाई लामा जो तिब्बत के आध्यात्मिक नेता है को तब शरण दी जब चीन ने तिब्बत पर आक्रमण किया था। चीन उन्हें एक खतरनाक अलगाववादी नेता मानता है। तब से, भारत - चीन का टकराव दलाई लामा को लेकर बना हुआ है।

✓ **डोकलाम विवाद 2017**

यह तब प्रकाश में आया जब चीनी भारतीय क्षेत्र में सड़क बनाने की कोशिश कर रहे थे और भारतीय सैनिकों ने, अपने भूटानी समकक्षों की सहायता से इस पर आपत्ति जताई, जिसके परिणामस्वरूप गतिरोध पैदा हो गया। डोकलाम रणनीतिक रूप से सिलीगुड़ी कॉरिडोर के करीब स्थित है, जो भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के साथ मुख्य भूमि को जोड़ता है। इस गलियारे को चिकन नेक भी कहा जाता है, जो भारत के लिए एक संवेदनशील बिंदु है।

✓ **स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्सः**

'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' भारत को घेरने के लिहाज से चीन द्वारा अपनाई गई एक अघोषित नीति है। इसमें चीन द्वारा भारत के समुद्री पहुँच के

(C) 7

(D) 8

उत्तर :- (D)

3. भारत के किस राज्य की सीमा नेपाल के साथ सीमा नहीं बनाती है?

(A) पश्चिम बंगाल

(B) सिक्किम

(C) बिहार

(D) हिमाचल प्रदेश

उत्तर :- (D)

4. प्राचीन भारतीय भौगोलिक मान्यता के अनुसार भारतवर्ष किस द्वीप का अंग था ?

(A) पुष्कर द्वीप

(B) जम्बू द्वीप

(C) कांच द्वीप

(D) कुश द्वीप

उत्तर :- (B)

5. भारतीय भूभाग का कुल क्षेत्रफल लगभग है-

(A) 32,87,263 वर्ग किमी.

(B) 1269219.34 वर्ग मील

(C) 32,87,263 वर्ग एकड़

(D) A व B दोनों

उत्तर :- (D)

6. भारत और श्रीलंका को अलग करने वाली जलसंधि है-

(A) कुक जलसंधि

(B) मलक्का जलसंधि

(C) पाक जलसंधि

(D) सुंडा जलसंधि

उत्तर :- (C)

7. किस भारतीय राज्य की सीमा सर्वाधिक राज्यों की सीमा को स्पर्श करती है?

(A) मध्य प्रदेश

(B) असम

(C) उत्तर प्रदेश

(D) आन्ध्र प्रदेश

उत्तर :- (C)

8. निम्नलिखित प्रमुख भारतीय नगरों में से कौन-सा एक सबसे अधिक पूर्व की ओर अवस्थित है?

(A) हैदराबाद

(B) भोपाल

(C) लखनऊ

(D) बंगलुरू

उत्तर :- (C)

9. भारत के किस प्रदेश की सीमाएं तीन देशों क्रमशः नेपाल, भूटान एवं चीन से मिलती है?

(A) अरुणाचल प्रदेश

(B) मेघालय

(C) पश्चिम बंगाल

(D) सिक्किम

उत्तर :- (D)

10. भारत के कितने राज्यों से समुद्र तटरेखा संलग्न है?

(A) 7

(B) 8

(C) 9

(D) 10

उत्तर:- (C)

11. निम्न नगरों में से कौन-सा कर्क रेखा के निकटतम है ?

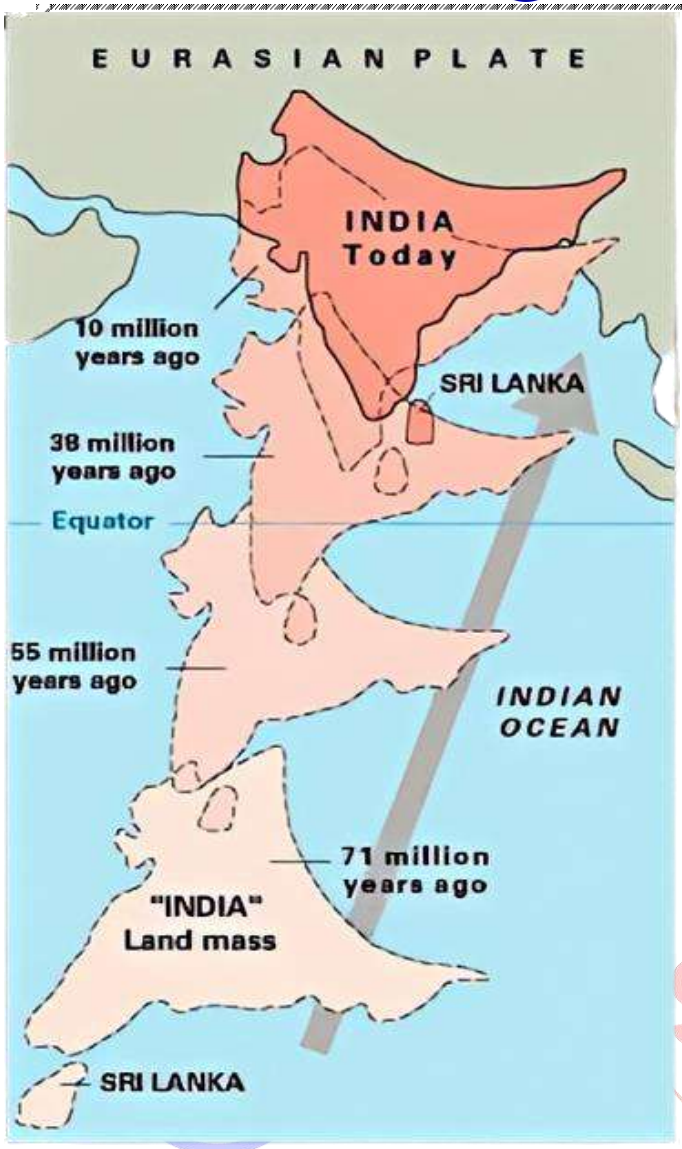

भारत का भौतिक विभाजन

भारत एक विशाल भू – भाग है जिसका निर्माण अलग – अलग भू-गर्भिय काल के दौरान हुआ है भू-गर्भिय निर्माणों के अलावा इस विशाल भू-भाग पर अपक्षय अपरदन तथा निक्षेपण का प्रभाव हैं ।

भारत को 6 भौतिक विभाजन के दृष्टीकोण से 6 भागों में बाँटा जा सकता हैं-

1. उत्तर भारत का पर्वतीय क्षेत्र

2. प्रायद्वीपीय पठार

3. मध्यवर्ती विशाल मैदान

4. तटवर्ती मैदान

5. द्वीप समूह

6. थार का मरुस्थल

SION NOTES
LY THE BEST WILL DO

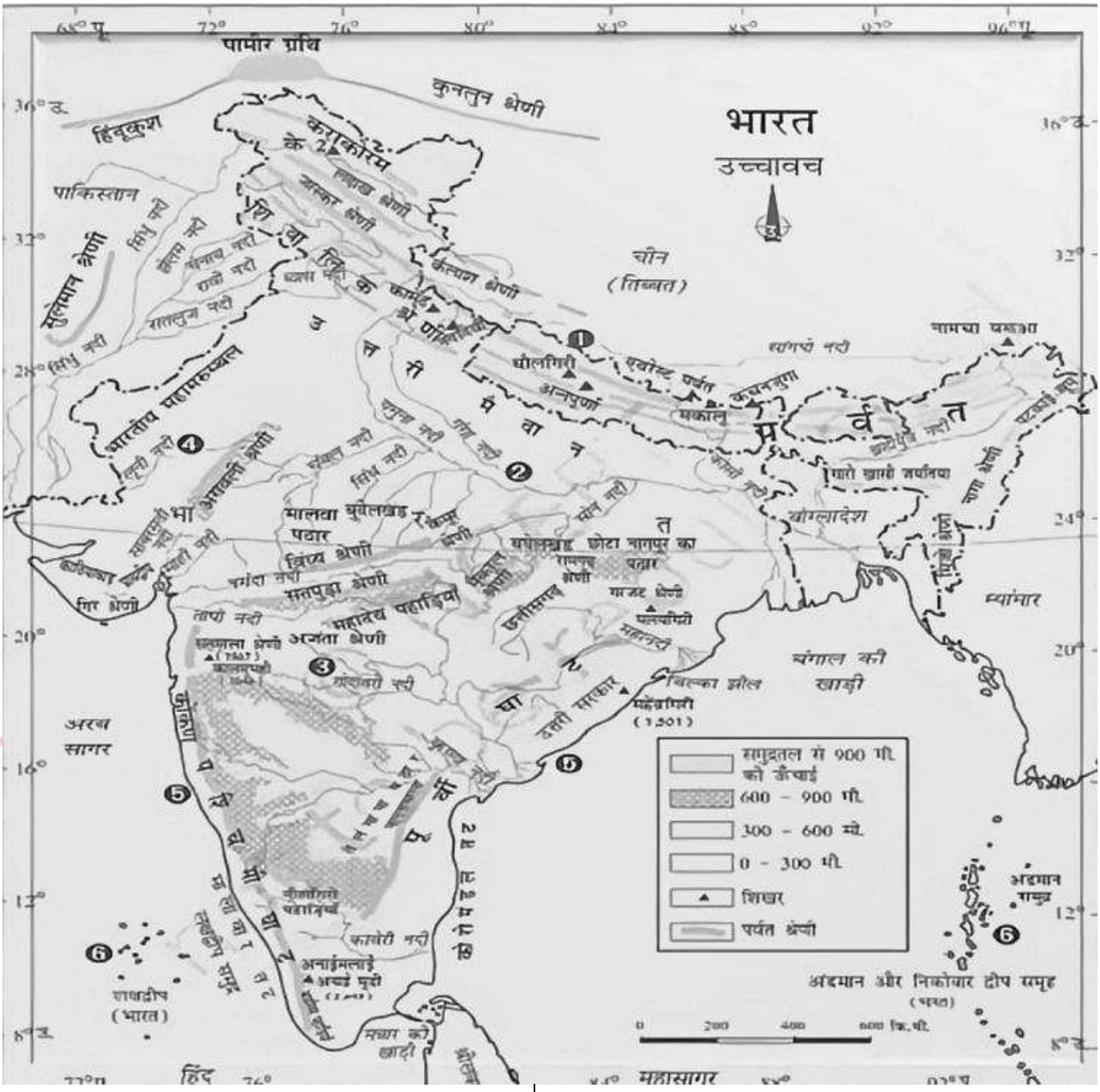

I. उत्तर भारत का विशाल पर्वतीय क्षेत्र

- **पर्वत**

हिमालय का विस्तार व स्थिति

- हमारे देश की उत्तरी सीमा पर हिमालय पर्वत पश्चिम से पूर्व की ओर एक वृहत् चाप के रूप में 5 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है ।
- लम्बाई = 2500 किलोमीटर
- चौड़ाई= 400 किलोमीटर (जम्मू कश्मीर व लद्दाख में)

  = 160 किलोमीटर (मध्यवर्ती भाग में)

  = 20-25 किलोमीटर (पूर्वी हिमालय में)
- ऊँचाई= उत्तरी हिमालय औसतन 5000-6000 मीटर

  = मध्य हिमालय औसतन 1800- 3000 मीटर

  = शिवालिक हिमालय औसतन 1200- 1800 मीटर
- इन नवीन मोड़दार पर्वत श्रेणियों की चौड़ाई पूर्व से पश्चिम की ओर बढ़ती जाती है , लेकिन ऊँचाई कम होती जाती है ।
- यह पर्वत श्रृंखला कई श्रेणियों से बनी है । इन श्रेणियों के मध्य में पठार तथा घाटियाँ मिलती हैं ।

- इन श्रेणियों का ढाल भारत की ओर तीव्र तथा तिब्बत की ओर धीमा है ।
- हिमालय का विस्तार पश्चिम में नंगा पर्वत (POK क्षेत्र) से लेकर पूर्व में नामचा बरवा पर्वत (अरुणाचल प्रदेश) तक है ।
- हिमालय का विस्तार पश्चिम में सिंधु नदी से लेकर पूर्व मे ब्रह्मपुत्र नदी तक है ।
- हिमालय का देशांतरिय विस्तार 74° - 96° पूर्वी देशांतर तक है ।
- हिमालय का विस्तार मुख्यतः भारत के 8 राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों (जम्मू कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम,प. बंगाल, असम व अरुणाचल प्रदेश) तथा 5 देशों भारत, नेपाल, भूटान व चीन में है ।

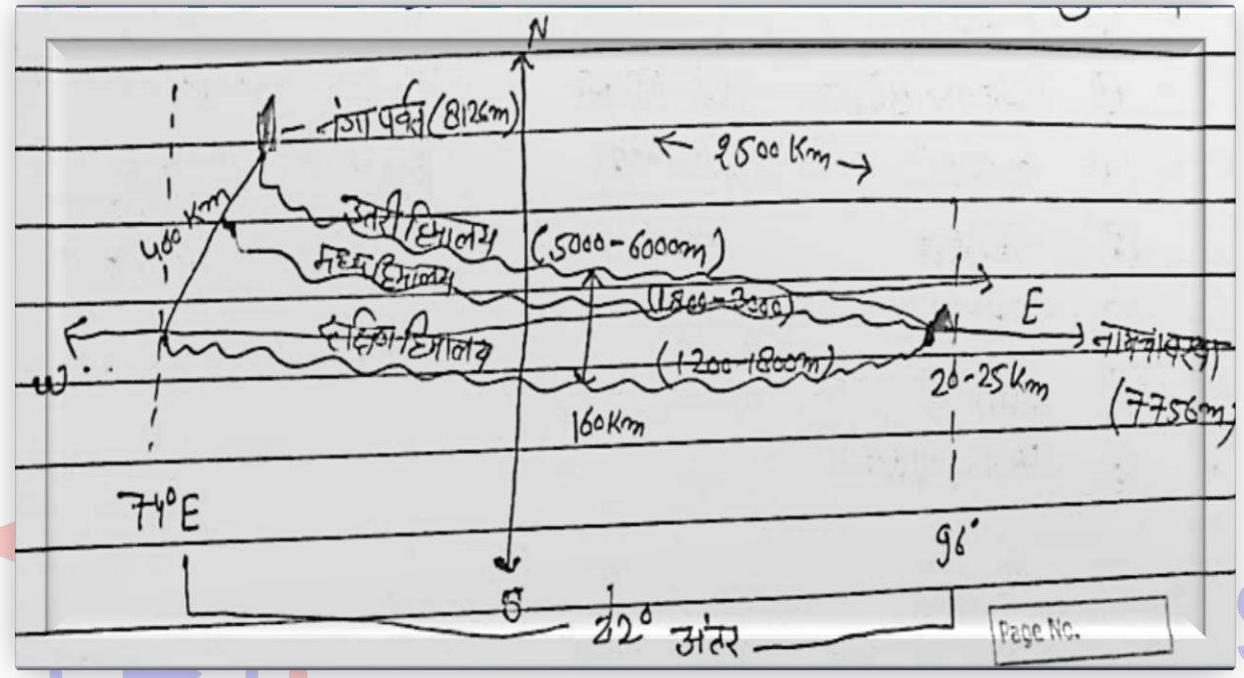

हिमालय की उत्पत्ति

- हिमालय एक नवीन मोड़दार पर्वत है ।
- नवीन मोड़दार पर्वतों की उत्पत्ति के विषय में कई सिद्धान्त प्रस्तुत किये गये हैं , किन्तु भूसंनतियों (Geosynclines) से नवीन मोड़दार पर्वतों की उत्पत्ति का मत अधिक मान्य है। यही बात हिमालय की उत्पत्ति पर भी लागू होती है ।
- लम्बे , संकड़े , छिछले व कमजोर तली वाले सागरीय भागों को भूसंनति कहा जाता है ।
- करोड़ों वर्ष पूर्व विश्व के सभी महाद्वीप एक बड़े स्थलखण्ड के रूप में थे , जिसे पैन्जिया नाम दिया गया है । इसका उत्तरी भाग लॉरेशिया तथा दक्षिणी भाग गोंडवानालैण्ड के नाम से जाना जाता है ।
- यूरेशिया वाले भाग को अंगारालैण्ड कहा जाता है । आज जहाँ हिमालय है वहाँ अंगारलैण्ड व गोंडवानालैण्ड के मध्य टेथिस सागर (Tethys Sea) नामक विशाल भूसंनति थी ।
- इसमें दोनों ओर से बहकर आने वाली नदियों द्वारा तलछट जमा होती रही । यद्यपि भूसंनति छिछली होती है , किन्तु निक्षिप्त तलछट के दबाव से इसकी तली धंसती रहती है तथा तलछट जमा होती रहती है । इस प्रकार टेथिस सागर में हजारों फीट की गहराई तक तलछट जमा होती रही ।
- तत्पश्चात् विभिन्न कारणों से इस तलछट पर दबाव पड़ने से इसमें वलन या मोड़ पड़े , जिसके परिणामस्वरूप हिमालय की उत्पत्ति हुई ।
- दबाव पड़ने की दिशा व कारणों के बारे में काफी मत भिन्नताएँ हैं कोबर (Kober) का मानना है कि भूसंनति में निक्षिप्त तलछट पर दोनों ओर से दबाव पड़ने के कारण मोड़दार पर्वतों की उत्पत्ति होती है । दबाव डालने वाले दोनों ओर के इन प्रदेशों को उन्होंने अग्र प्रदेश (Foreland) कहा अग्र प्रदेशों के दबाव के कारण इनके तटीय क्षेत्रों में वलन पड़ते हैं, तथा मध्यवर्ती भाग साधारणत : इस वलन प्रक्रिया से अछूता रहने

के कारण समतल उच्च भूमि के रूप में रह जाता है , जिसे कोबर मध्य पिण्ड (Median Mass) कहते हैं ।

- उनके अनुसार हिमालय के संदर्भ में अंगारालैण्ड व गोण्डवानालैण्ड दोनों ही अग्र प्रदेश हैं तथा तिब्बत का पठार एक मध्य पिण्ड है , जैसा कि चित्र दर्शाया गया है ।

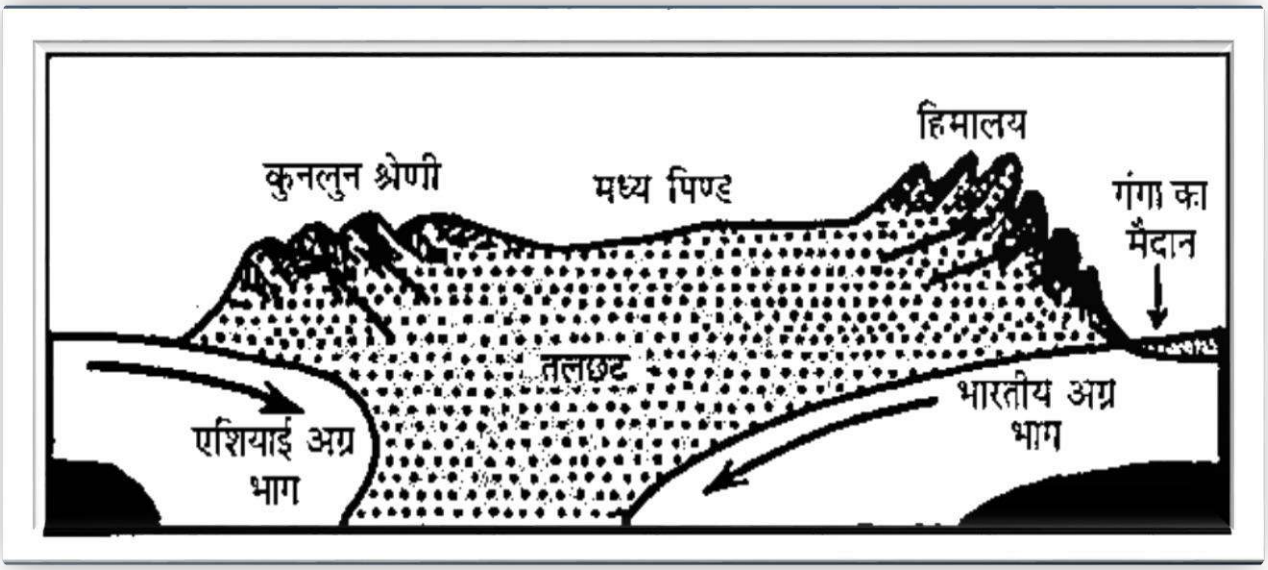

- इसे भौगोलिक दृष्टि से तीन मुख्य भागों में बांटा जाता है –

1. महा हिमालय (Greater Himalayas)
2. लघु हिमालय (Lesser Himalayas)
3. शिवालिक हिमालय (Shivalik Himalayas)

NOTE- कुछ भूगोलवेत्ता ट्रांस हिमालय को भी इसका भाग मानते हैं

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

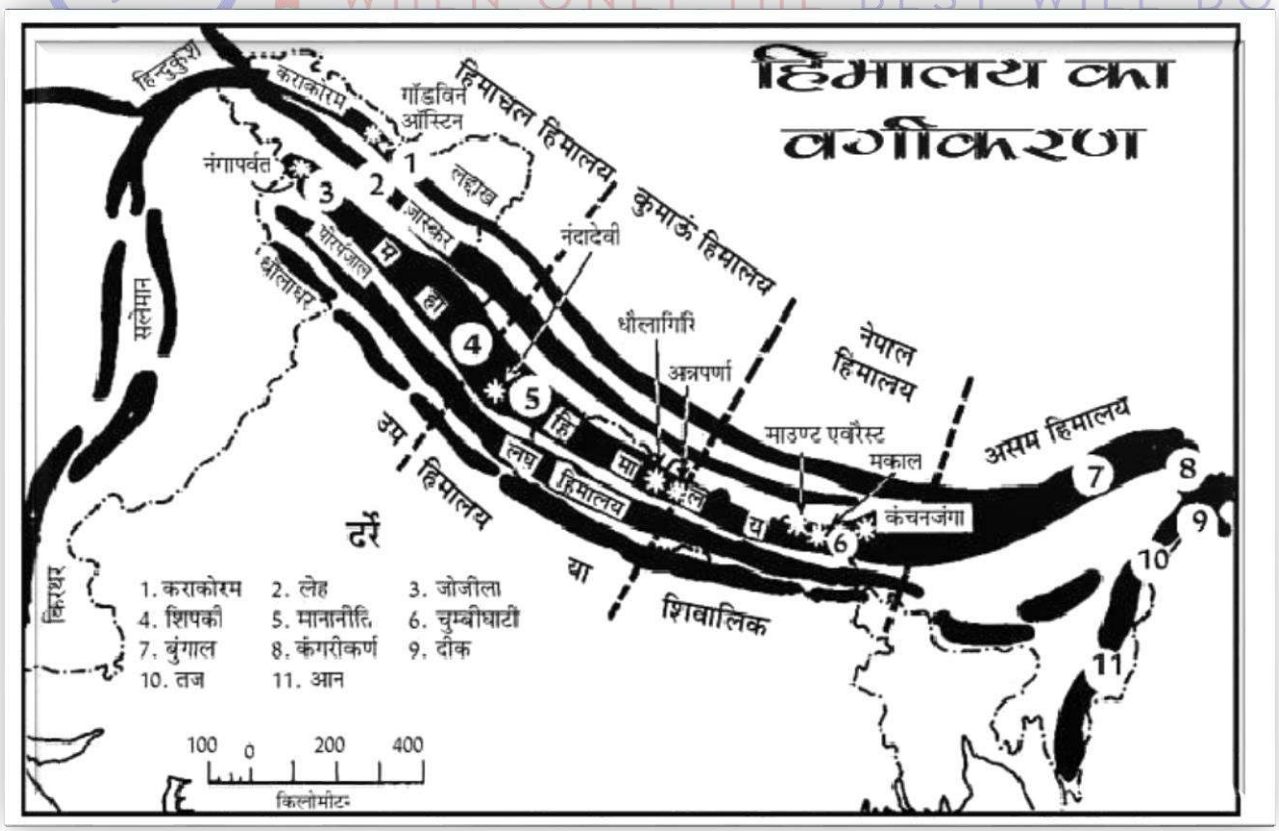

ट्रांस हिमालय :-

- ट्रांस हिमालय का निर्माण हिमालय से भी पहले हो चुका था।
- इसके अन्तर्गत काराकोरम, लद्दाख, कैलाश व जास्कर श्रेणी आती हैं।
- इन श्रेणियों पर वनस्पति का अभाव पाया जाता है।

(A) काराकोरम श्रेणी –

- यह ट्रांस हिमालय की सबसे उत्तरी श्रेणी है।
- इसकी खोज वर्ष 1906 स्वेन हेडन ने की थी।
- इस श्रेणी को ''एशिया की रीढ़'' कहा जाता है।
- भारत की सबसे ऊँची चोटी k2 या गाडविन ऑस्टिन (8611मी.) काराकोरम श्रेणी पर ही स्थित है।
- यह विश्व की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है ।
- काराकोरम दर्रा एवं इंदिरा कॉल इसी दर्रा में स्थित है ।
- काराकोरम दर्रा (विश्व का सबसे ऊँचा दर्रा) काराकोरम श्रृंखला पर स्थित कश्मीर को चीन से जोड़ने वाला संकीर्ण दर्रा है।
- काराकोरम श्रृंखला पर भारत का सबसे लम्बा ग्लेशियर सियाचिन स्थित है।
- विश्व का सबसे ऊँचा सैनिक अड्डा (सियाचिन) यहीं अवस्थित है।
- सियाचिन ग्लेशियर से नुब्रा नदी का उद्गम होता है जिसके प्रवाह क्षेत्र में घाटी का निर्माण होता है।
- काराकोरम श्रेणी पर चार प्रमुख हिमनद (ग्लेशियर) स्थित हैं।
  - सियाचिन (72 km)
  - बाल्टोरो - (58km)
  - बीयाफो – 63 km
  - हिस्पर (61 Km)

(B) लद्दाख श्रेणी –

- विश्व की सबसे तीव्र ढलान वाली चोटी राकापोशी (7788मी.) लद्दाख श्रेणी पर ही स्थित है ।
- लद्दाख श्रेणी दक्षिण पूर्व की ओर कैलाश श्रेणी के रूप में स्थित है।
- यह श्रेणी सिन्धु नदी व इसकी सहायक नदी के बीच जल विभाजक का कार्य करती है।
- इस श्रेणी में भारत का सबसे ऊँचा पठार '' लद्दाख का पठार'' स्थित है इसी पठार पर भू तापीय ऊर्जा के लिए प्रसिद्ध पूंगा घाटी स्थित है ।
- यह भारत का न्यूनतम् वर्षा वाला क्षेत्र ट्रास स्थित है ।
- इसका सर्वोच्च शिखर माउंट कैलाश है ।
- इस क्षेत्र में अलवणजल की झीलें जैसे- डल और वुलर तथा लवणजल झीलें जैसे- पैंगोंग सो (गलवान घाटी के नजदीक यह विश्व की सबसे ऊँची खारे पानी की झील है) और सोमुरीरी भी पाई जाती हैं ।

(C) जास्कर श्रेणी -

- यह लद्दाख हिमालय के समांतर दक्षिणी दिशा में स्थित हैं ।
- नंगा पर्वत इस पर्वत श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है।
- लद्दाख व जास्कर श्रेणीयों के बीच से ही सिन्धु नदी बहती है।
- इस श्रेणी में श्योक नदी प्रवाहित होती है।

उत्तरी हिमालय वृहत् या हिमाद्रि या महान हिमालय –

- इसका विस्तार नंगा पर्वत से नामचा बरवा पर्वत तक धनुष की आकृति में फैला हुआ है जिसकी कुल लम्बाई 2500 km तक है तथा औसत ऊँचाई 5000- 6000 मी. तक है।
- उत्तरी हिमालय को भौतिक विभाजन के दृष्टिकोण से दो भागों में बाँटा जा सकता है-

- विश्व की सर्वाधिक ऊँची चोटियाँ इसी श्रेणी पर पाई जाती है जिसमें प्रमुख है-
  - माउंट एवरेस्ट (8848 मी.) विश्व की सबसे ऊँची चोटी
  - कंचनजंगा (8598 मी.)
  - मकालू (8481 मी.)
  - धौलागिरी (8172 मी.)
  - अन्नपूर्णा (8076 मी.)
  - नंदा देवी (7817 मी.)

पीरपंजाल दर्रा-

जम्मू से श्रीनगर

जोजिला दर्रा-

श्रीनगर से कारगिल

लद्दाख के दर्रे-

फातुला दर्रा-

कारगिल से लेह

खारदुन्गला दर्रा-

लेह से नुब्रा घाटी यह विश्व का सबसे ऊंचा मोटर वाहन चलाने योग्य दर्रा था (18380 फीट) लेकिन वर्तमान में विश्व का सबसे ऊँचा मोटरसाहन चलाने योग्य दर्रा उमलिंगा दर्रा (19300 फीट) है

चांगला : - यह लद्दाख को तिब्बत से मिलाता है, यह शीत ऋतु में हिमपाद के लिए बंद रहता है ।

लानक ला : - लद्दाख के चीन अधिकृत अक्साई चीन में स्थित है और तिब्बत की राजधानी तथा लद्दाख के बीच सम्पर्क बनाता है ।

हिमाचल प्रदेश के दर्रे-

बरालाचा ला :- यह मंडी और लेह को आपस में जोड़ता हैं इसी से मनाली - लेह सड़क गुज़रता हैं। यह शीत ऋतु बंद रहता हैं

रोहतांग :- यह हिमाचल के लौह और स्पीति के बीच में संपर्क बनाता हैं इसी से मनाली - लेह सड़क गुज़रता हैं । इस पर अटल सुरंग (9.02) स्थित हैं ।

शिपकी ला : - हिमाचल प्रदेश को चीन से मिलाता हैं

देबचा दर्रा- मनाली से शिमला

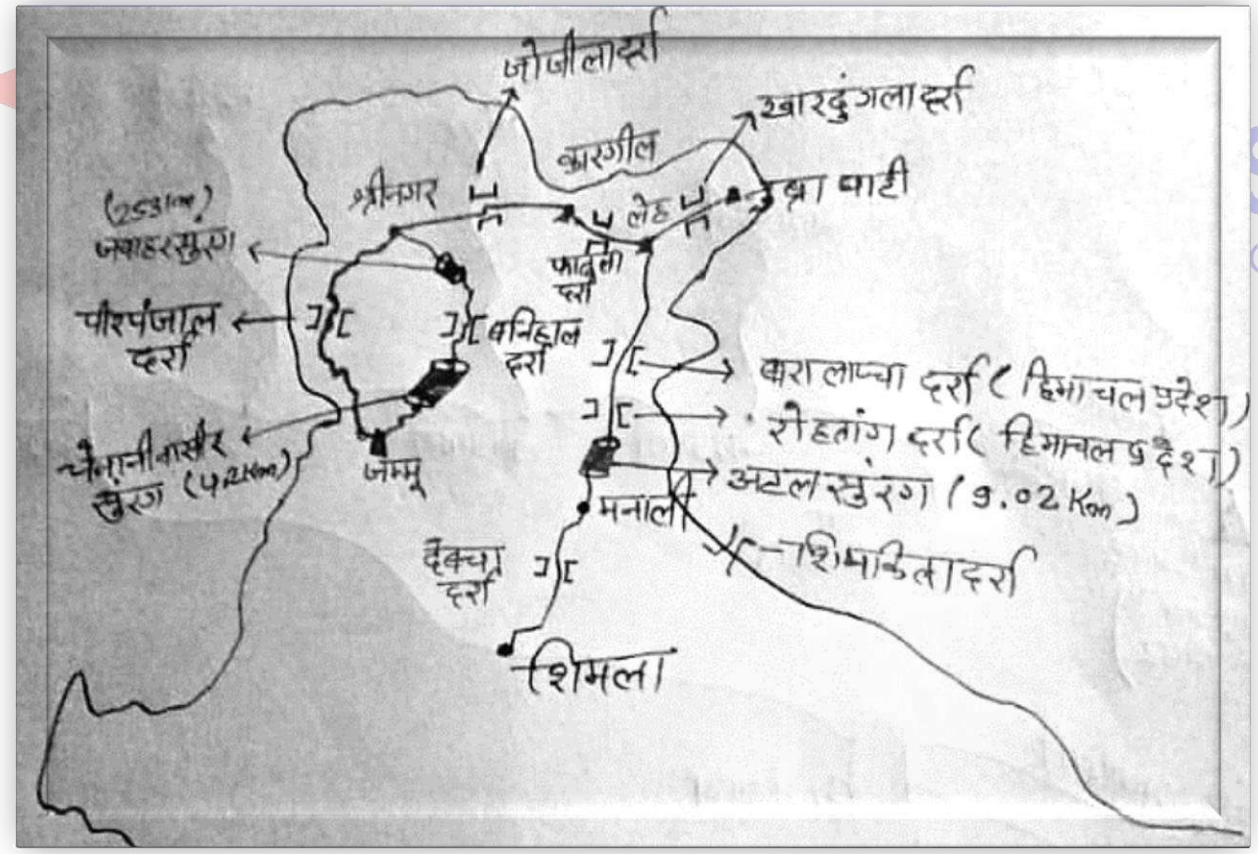

उत्तराखंड के दर्रे

लिपुलेख : - यह उत्तराखंड को तिब्बत से जोड़ता है । यह उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले में अवस्थित हैं। इस पर उत्तराखंड, चीन, और नेपाल के ट्राई - जंक्शन स्थित हैं । इसी से कैलाश मानसरोवर की यात्रा सम्पन्न होता हैं ।

माना : - यह भी उत्तराखंड को तिब्बत से जोड़ता हैं जो बद्रीनाथ मंदिर से कुछ ही दूर स्थित हैं।

नीति :- यह भी उत्तराखंड और तिब्बत के जोड़ता है जो नवम्बर से लेकर मई तक बंद रहता है ।

2. **<u>पूर्वी हिमालय के दर्रे : -</u>**

सिक्किम के दर्रे

नाथू ला : - यह सिक्किम (भारत) – चीन सीमा पर स्थित है जो लगभग 4310 मी. की ऊँचाई पर है। यह प्राचीन सिल्क मार्ग का अंग था और यहाँ से भारत एवं चीन के बीच व्यापारिक संबंध थे । भारत – चीन युद्ध (वर्ष 1962) के बाद इसे बंद कर दिया गया था लेकिन वर्ष 2006 को पुनः खोल दिया गया है ।

जेलेप ला : -यह सिक्किम – भूटान सीमा पर स्थित है और चुम्बी घाटी द्वारा सिक्किम को ल्हासा (तिब्बत) से जोड़ता है ।

अरुणाचल प्रदेश के दर्रे

बोम-डि-ला बुमला यांग्याप दर्रे: - यह तीनों दर्रे अरुणाचल प्रदेश को तिब्बत के पठार से जोड़ते है ।

पान्गसांड : - यह भी अरुणाचल प्रदेश को म्यांमार से जोड़ता है ।

प्रश्न :- निम्नलिखित में से कौन सा सुमेलित नहीं है ? (RAS PRE. 2016)

दर्रे	राज्य में स्थिति
(1) शिपकी ला -	जम्मू व कश्मीर
(2) जेलेप ला -	सिक्किम
(3) बॉम डिला -	अरुणाचल प्रदेश
(4) माना और नीति -	उत्तराखण्ड

उत्तर :- (1)

इंडो तिब्बत थ्रस्ट (IT THARST)	ट्रांस हिमालय को महान हिमालय से अलग
मुख्य केन्द्रीय दरार (MCT)	महान हिमालय को मध्य हिमालय से अलग

चौड़ाई 350 km है। इसका विस्तार भारत में लगभग 61.11 प्रतिशत है।

प्रश्न :- भारत के थार मरुस्थल का कितना प्रतिशत क्षेत्र राजस्थान में है ? (RAS PRE. 2016)

(1) 40% **(2) 60%**

(3) 80 % **(4) 90 %**

उत्तर :- 60 %

मैदानों का महत्त्व –

- यह मैदान नदियों के द्वारा लाई गई जलोढ़ तथा काँप मृदा के द्वारा निर्मित होते हैं।
- यह मैदान उत्पादन व उत्पादकता की दृष्टि से उपजाऊ होते हैं।
- मैदानी भागों में जनसंख्या घनत्व उच्च होता है।
- सिंचाई के साधन तथा नहर, कुएँ इत्यादि आसानी से निर्मित किए जा सकते हैं।
- इन क्षेत्रों में गन्ना, चावल, गेहूँ इत्यादि का उत्पादन होता है।
- यह क्षेत्र समतल होते हैं, जिस कारण यहाँ व्यापारिक केन्द्र राजधानी नगर, दर्शनीय नगर इत्यादि स्थित होते हैं।

प्रायद्वीपीय पठार

- यह भारत का सबसे बड़ा भौतिक प्रदेश है जो लगभग 16 लाख वर्ग. कि. मी. क्षेत्र में फैला हुआ है।
- अरावली, राजमहल, कैमूर, व शिलांग की पहाड़ियाँ इसकी उत्तरी सीमा बनाती है तथा दक्षिण में कन्याकुमारी तक विस्तृत हैं।
- उत्तर से दक्षिण लम्बाई- 1600 किमी.
- पूर्व से पश्चिम लम्बाई- 1400 किमी.

मालवा का पठार –

- आकृति- त्रिभुजाकार
- निर्माण – ज्वालामुखी क्रिया द्वारा
- मिट्टी- मध्यम काली
- फसल- कपास, सोयाबीन
- उत्तर में अरावली पर्वत, दक्षिण में विन्ध्य श्रेणी व पूर्व में बुन्देलखण्ड से घिरा हुआ है। चम्बल नदी जो यमुना नदी की सहायक नदी है मालवा पठार से ही निकली है।

बुन्देलखण्ड का पठार -

- इसके उत्तर में यमुना नदी दक्षिण में विन्ध्य श्रेणी उत्तर - पश्चिम में चम्बल नदी दक्षिण - पूर्व में बघेलखण्ड पठार स्थित है।
- इसके अन्तर्गत उत्तर प्रदेश का बांदा, हमीरपुर , ललितपुर तथा मध्यप्रदेश का दतिया, छतरपुर, पन्ना जिले आते है।

बघेलखण्ड का पठार –

- इसके अन्तर्गत मध्यप्रदेश का सतना व रीवा जिला शामिल है तथा उत्तरप्रदेश के मिर्जापुर का कुछ भाग आता है।

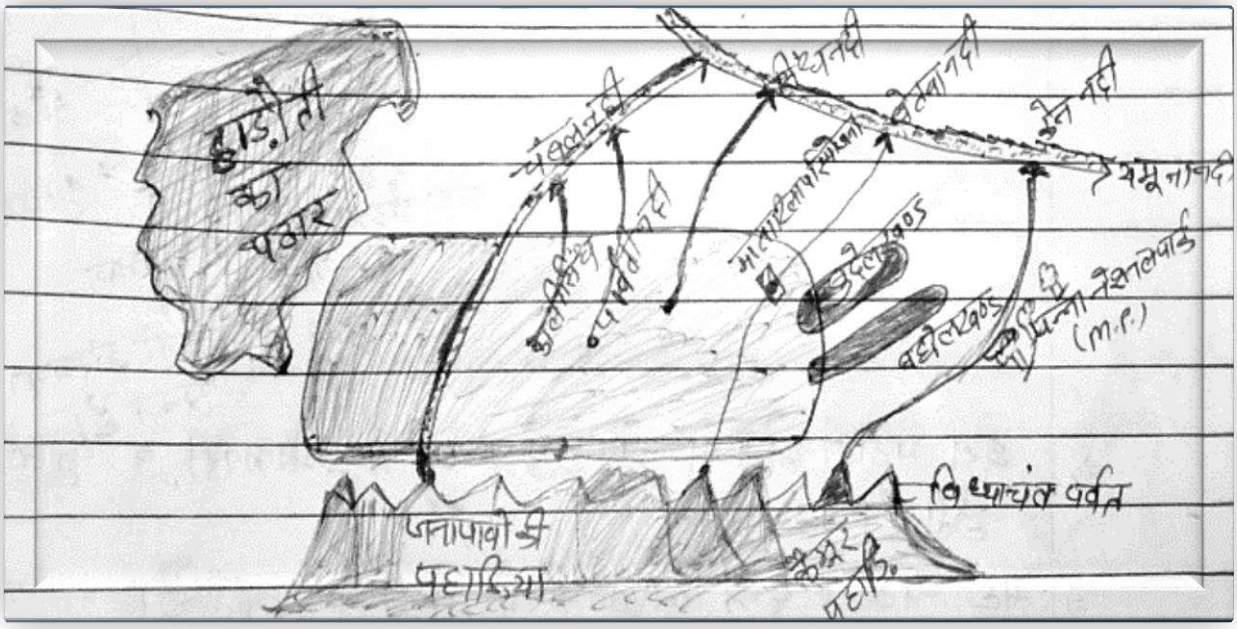

- **मालदा गैप** -मेघालय के पठार को प्रायद्वीपीय भारत से अलग करता है।
  - इसके उत्तर दिशा में कार्बी एलोंग का पठार (असम) स्थित है।

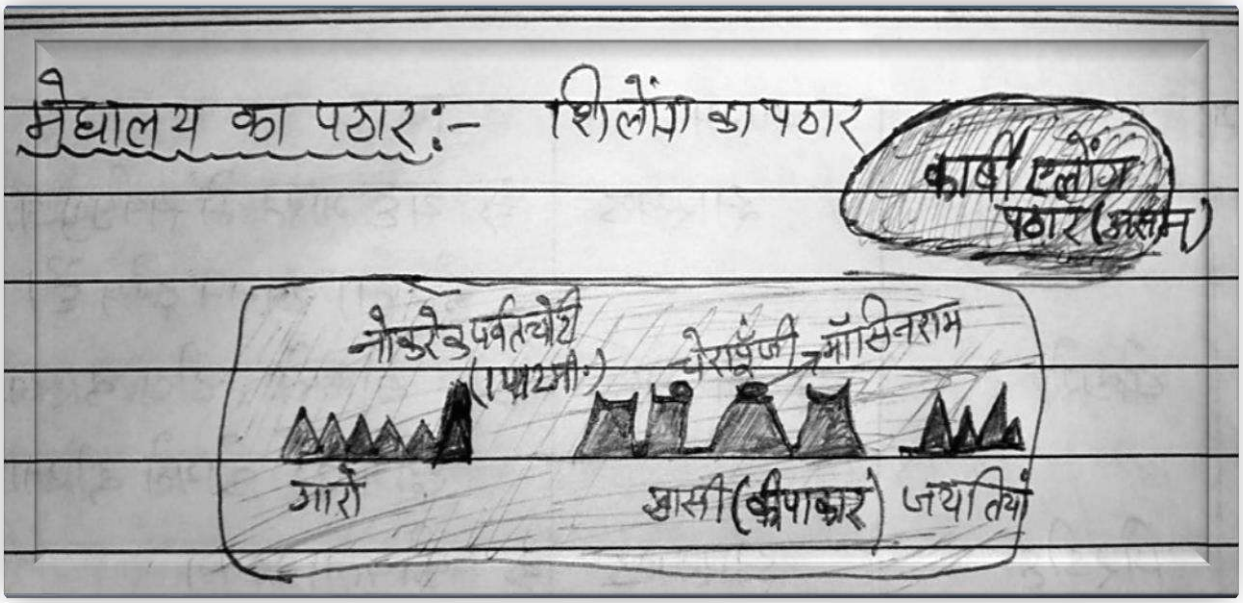

प्रश्न :- भारत का सबसे अधिक विस्तृत भू-आकृतिक प्रदेश है – (RAS PRE. 2015)

(1) दक्षिण का पठार

(2) उत्तरी मैदान

(3) उत्तरी पर्वत

(4) तटीय मैदान

उत्तर :- (1)

विध्यांचल पर्वत-

- यह पर्वत 5 राज्यों में फैला है। (विस्तार लगभग 1200किमी. औसत ऊँचाई- 500-600 मी.)
- जिनमें गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, झारखण्ड व बिहार है।
- यह पर्वत लाल बलुआ पत्थर व चुना पत्थर से निर्मित परतदार/ अवसादी चट्टानों से निर्मित है।
- विध्यांचल पर्वत की प्रमुख पहाड़ियों में भारनेर, कैमूर व पारसनाथ है।

सतपुड़ा पर्वत-

- यह पर्वत 4 राज्यों में फैला है। (विस्तार लगभग 900किमी. औसत ऊँचाई- 700-800 मी.)
- जिनमें गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र व छत्तीसगढ़ है।
- इस पर्वत का निर्माण कठोर ग्रेनाइट व नीस चट्टानों से हुआ है।
- सतपुड़ा पर्वत की प्रमुख पहाड़ियों में राजपीपला, गवालीगड़, महादेव व मैकाल है।
- महादेव पहाड़ियों पर सतपुड़ा पर्वत की सर्वोच्च पर्वत चोटी धुपगढ़(1350मी.) मध्यप्रदेश राज्य में स्थित है तथा इसके निकट ही मध्यप्रदेश का प्रसिद्ध हिल स्टेशन पंचमढ़ी स्थित है ।
- मैकाल पहाड़ियों की अमरकंटक पर्वत चोटी से नर्मदा व सोन नदियों का उद्गम होता है ये दोनों नदियाँ एक दुसरे के विपरीत दिशा में बहती है ।
- नर्मदा नदी विध्यांचल पर्वत व सतपुड़ा पर्वत के मध्य भ्रंश घाटी (RIFTVALLEY) का निर्माण करती है ।

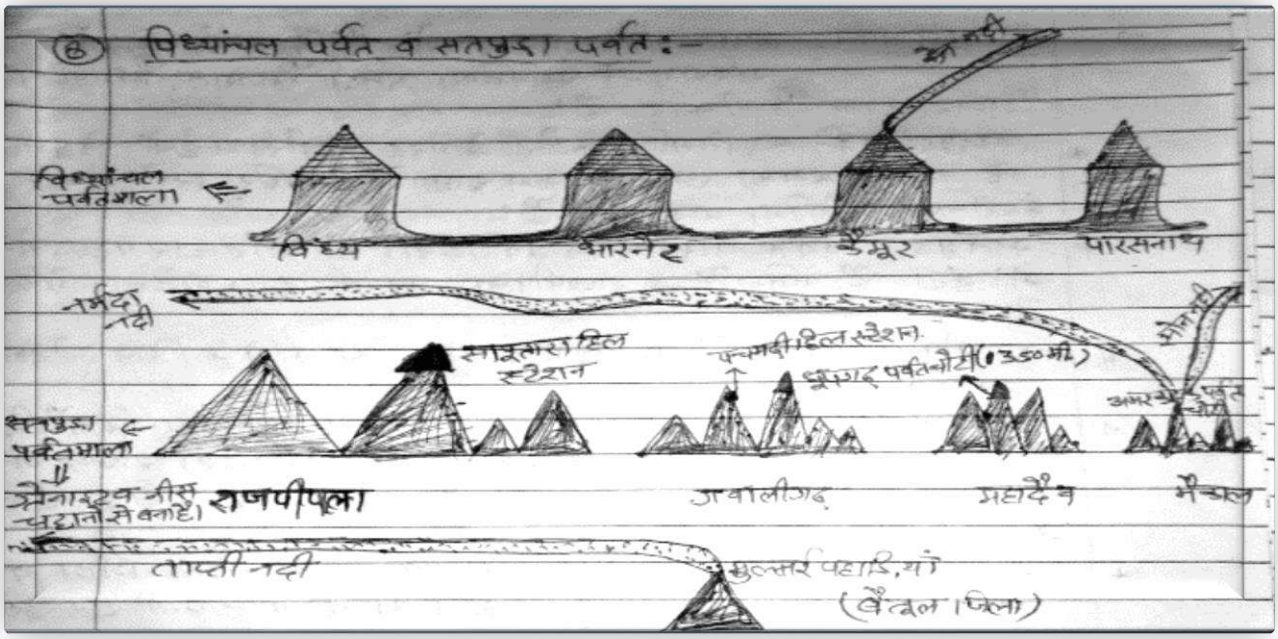

पश्चिमी घाट :-

- कुल लंबाई - 1600 किमी.
- औसत ऊँचाई - 1200मी.
- यह भारत की सबसे लंबी पर्वतमाला है ।
- विशेषता

(i) पश्चिमी घाट का उत्तरी भाग कम चौड़ाई में है जबकि दक्षिणी भाग अधिक चौड़ाई में है ।

(ii) पश्चिमी घाट के पश्चिमी भाग में अधिक वर्षा होने के कारण यहाँ सर्वाधिक जैव विविधता मिलती है जबकि पश्चिमी घाट का पूर्वी भाग वृष्टि छाया प्रदेश में आता है । (iii) इसके पश्चिमी भाग का ढाल तीव्र है जबकि पूर्वी भाग का ढाल मन्द है ।

(iv) इसको सहयाद्रि भी कहते हैं । तथा इसे तीन भागों में विभाजित करते हैं

प्रश्नः- भारत में निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र जैव विविधता तप्त स्थल है ?

(1) सुंदरबन **(2) पश्चिमी घाट**

(3) पूर्वी घाट **(4) गंगा के मैदान**

उत्तर :- (2)

(A) उत्तरी सहयाद्रि :- विस्तार - ताप्ती नदी से 16° उत्तरी अक्षांश तक ।

प्रमुख चोटियाँ कलसुबाई - 1646मी., सलहर - 1567मी., महाबलेश्वर -1438मी. यह सभी महाराष्ट्र में स्थित है ।

(B) मध्य सहयाद्रि :- विस्तार - 16 ° 3' अक्षांश से नीलगिरी तक राज्य- गोवा , कर्नाटक

प्रमुख चोटियाँ कुद्रेमुख 1892 मी. पुष्पागिरि- 1714मी. यह सभी कर्नाटक में स्थित है ।

(C) दक्षिणी सहयाद्रि :-

विस्तार - नीलगिरी - कन्याकुमारी

राज्य - केरल , तमिलनाडु

अनाईमुडी - केरल (2695मी.) यह प्रायद्वीपीय पठार की सबसे ऊँची चोटि है ।

पश्चिमी घाट के दर्रे :-

भोर घाट :- यह महाराष्ट्र में स्थित है जो पुणे को कोलकाता से जोड़ता है ।

पाल घाट :- यह केरल राज्य में स्थित है यह दर्रा कोच्चि को कोयम्बटूर से जोड़ता है ।

थाल घाट :- यह महाराष्ट्र राज्य में स्थित है यह मुंबई को नासिक से जोड़ता है ।

सेनकोटटा :- यह केरल राज्य में स्थित है यह दर्रा तिरुवनंतपुरम को मदुरै से जोड़ता है ।

पूर्वी घाट :-

कुल लंबाई - 1300किमी.

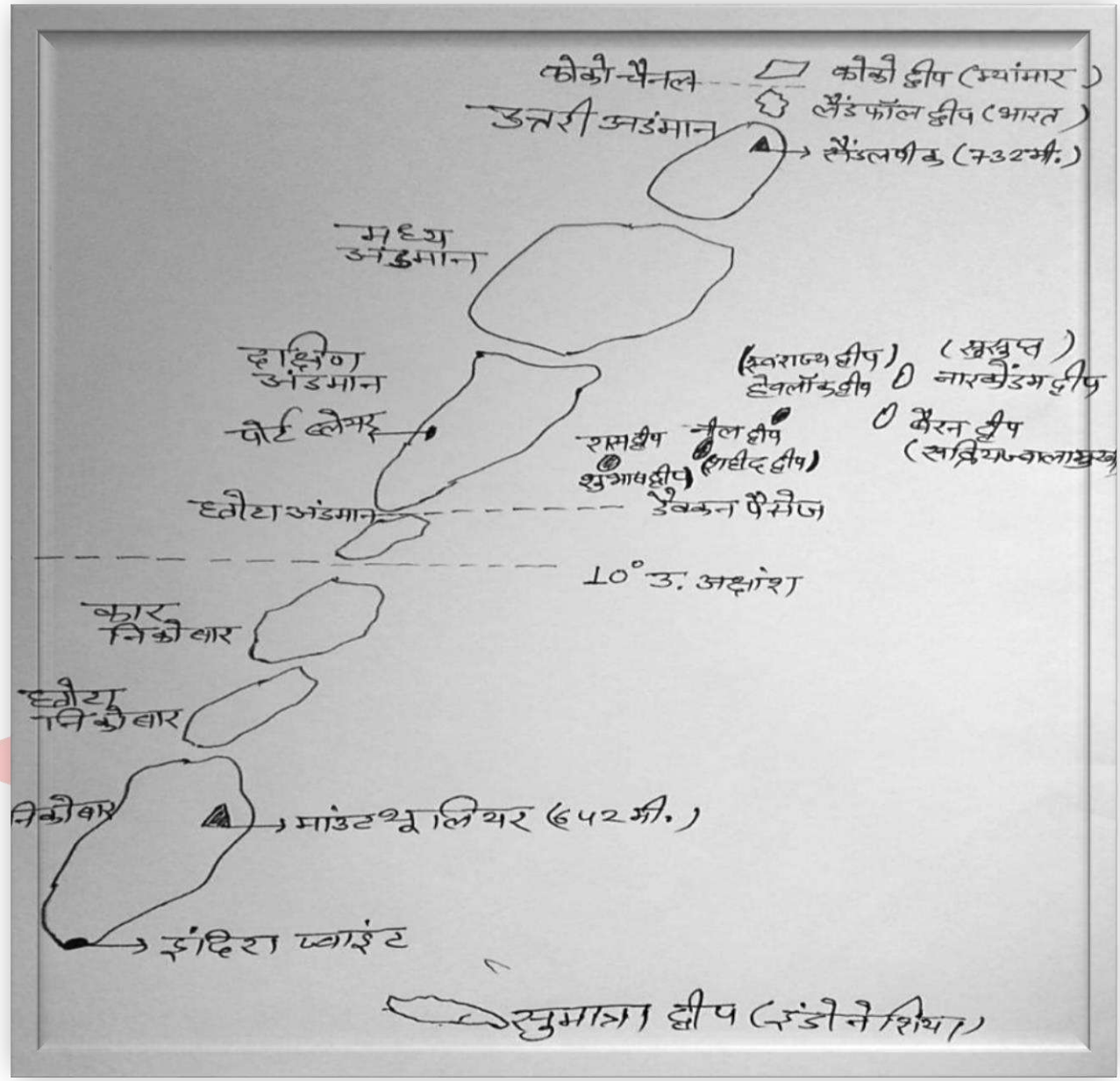

- ***लक्ष्यद्वीप समूह***
- *1 नवम्बर, 1973 को तीन बड़े द्वीप समूह लक्कादिव, मिनिकॉय व अमिनदीव को मिलाकर इनका संयुक्त नाम लक्षद्वीप रखा।*
- *ये द्वीप अरब सागर में स्थित हैं।*
- *इसका निर्माण प्रवाल भित्ति / मुंगे से हुआ हैं।*
- *इनमें तीन द्वीप मुख्य हैं- लक्षद्वीप (उत्तर में), मिनीकॉय (दक्षिण में), कावारत्ती (मध्य में)।*
- *9° चैनल कावारत्ती को मिनीकॉय से अलग करती हैं।*
- *8° डिग्री चैनल मिनीकॉय द्वीप (भारत) को मालदीव से अलग करता हैं।*

- ***<u>अन्य द्वीप</u>***

<u>माजुली द्वीप</u>

- *माजुली द्वीप दुनिया का सबसे बड़ा नदी द्वीप हैं ।*
- *जो असम के ब्रह्मपुत्र नदी के मध्य में हैं ।*
- *यह अपनी जैव विविधता के लिए जाना जाता हैं ।*
- *इस द्वीप को असम सरकार (2016) ने जिला घोषित किया हैं ।*
- *जिससे यह देश का पहला द्वीपीय जिला बन गया हैं ।*

- ***<u>तटवर्ती मैदान</u>***

- भारत में तटीय मैदान पश्चिम घाट के पश्चिम तथा पूर्वी घाट के पूर्व में स्थित हैं ।
- यह पश्चिम में अरब सागर से लेकर पूर्व में बंगाल की खाड़ी तक विस्तृत है ।
- भारत के तटीय मैदान लगभग 6000 किमी. की दूरी में स्थित हैं इनका निर्माण नदियों के द्वारा किया गया हैं ।
- पूर्वी तटीय मैदान पश्चिमी तटीय मैदान की अपेक्षा अधिक चौड़ा होता हैं ।
- पूर्वी घाट का अधिक चौड़ा होने का कारण नदियों के द्वारा डेल्टा का निर्माण करना हैं ।
- अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ ज्वारनदमुख का निर्माण करती हैं ।
- मालाबार तट पर लैगून झील पाए जाते हैं जिन्हें **कयाल** कहते हैं ।
- पूर्वी तटीय मैदान कृषि की दृष्टि से अधिक विकसित हैं ।

तटीय मैदान को 2 भागों में विभाजित किया जा सकता हैं ।

1. पश्चिमी तटीय मैदान
2. पूर्वी तटीय मैदान

1. पश्चिमी तटीय मैदान में शामिल मैदान-

(a) गुजरात का तटीय मैदान

(b)कोंकण का तटीय मैदान

(c)कर्नाटक का तटीय मैदान

(d) मालाबार का तटीय मैदान

2. पूर्वी तटीय मैदान में शामिल मैदान-

(a) उत्कल (ओड़िशा) का तटीय मैदान

(b) आंध्र का तटीय मैदान

(c) तमिलनाडु का तटीय मैदान

(d) पश्चिमी तटीय मैदान

1. पश्चिमी तटीय मैदान –

- यह मैदान पश्चिमी घाट के पश्चिम में स्थित हैं जो कि कच्छ प्रायद्वीप से लेकर कन्याकुमारी तक अवस्थित हैं।
- इस मैदान का निर्माण पश्चिम कि ओर बहने वाली नदियों के द्वारा होता हैं जो कि ज्वारनदमुख बनाती हैं।
- इस मैदान कि औसत चौड़ाई 64 km. हैं जो कि उत्तर की ओर 100 km. से दक्षिण कि ओर 50 km. तक हैं ।

प्रादेशिक रूप से पश्चिम घाट को निम्न तटवर्ती मैदानों में बाँटा जा सकता हैं।

1. **कच्छ का मैदान –**

- यह गुजरात राज्य में स्थित हैं। इस क्षेत्र में समुन्द्रों में आने वाले ज्वारों के आंतरिक धरातल में प्रवेश करने के कारण यह लवणीय हो जाते हैं जो कृषि के लिए अनुपयोगी होते हैं ।

2. **काठियावाड़ का मैदान –**

मंडाव की पहाड़ियों से निकलने वाली नदियों के द्वारा इस मैदान का निर्माण हुआ हैं,
यह मैदान कुछ ही किलोमीटर चौड़ा हैं इसलिए यह कृषि हेतु अनुपयोगी हैं।

3. **गुजरात का मैदान –**

यह मैदान साबरमती, माही, नर्मदा और ताप्ती नदी के कारण निर्मित हैं ।
यह मैदान उपजाऊ होने के कारण कृषि हेतु उपयोग में लिया जा सकता हैं।

4. **कोंकण का मैदान –**

यह मैदान महाराष्ट्र एवं गोवा में स्थित जो कि सकरा व पथरीला हैं।
यहाँ पर नारियल, काजू जैसी फसलें उगाई जाती हैं।

5. **कन्नड़ का मैदान –**

यह मैदान कर्नाटक के तटवर्ती भागों में स्थित हैं।
इस क्षेत्र में बढ़ने वाली शरावती नदी पर जोग जलप्रपात अथवा (गरसोप्पा) स्थित हैं ।

6. **मालाबार का मैदान –**

- केरल में स्थित
- इस भाग में एक विशेष प्रकार की भू -आकृति कयाल पश्च्यजल पाई जाती हैं।

अभ्यास प्रश्न

Q.1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए

1. भारत में, हिमालय केवल 5 राज्यों में फैला हुआ हैं ।

2. पश्चिमी घाट केवल पांच राज्यों में फैले हुए हैं।

3. पुलिकट झील केवल दो राज्यों में फैली हुई हैं ।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं ?

(A) केवल 3 (B) केवल 1 और 2

(C) केवल 2 और 3 (D) केवल 1 और 3

उत्तर :- **(A)**

Q.2. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन 'सर क्रीक' के विषय में सही हैं ?

(A) यह भारत और पाकिस्तान के बीच झेलम नदी को विभाजित करने वाली एक काल्पनिक रेखा हैं ।

(B) यह गुजरात और पाकिस्तान के सिंध प्रान्त के बीच सीमा बनाता हैं ।

(C) यह भारत और म्यांमार के बीच सीमा बनाने वाली एक संकरी धारा हैं

(D) यह बंगाल की खाड़ी में एक अति लघु द्वीप और एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल हैं

उत्तर :- **(B)**

Q.3. यदि हिमालय – पर्वत – श्रेणियाँ नहीं होती तो भारत पर सर्वाधिक संभाव्य भौगोलिक प्रभाव क्या होता

1. देश के अधिकांश भाग में साइबेरिया से आने वाली शीत लहरों का अनुभव होता ।

2. सिंध-गंगा मैदान इतनी सुविस्तृत जलोढ़ मृदा से वंचित होता ।

3. मानसून का प्रतिरूप वर्तमान प्रतिरूप से भिन्न होता ।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही हैं/हैं ?

(A) केवल 1 और 3 (B) केवल 1

(C) केवल 2 और 3 (D) 1,2 और 3

उत्तर **(D)**

Q.4. निम्नलिखित समूहों में कौन सा पूर्व से पश्चिम की ओर पर्वत शिखरों का सही कम हैं ?

(A) कंचनजंगा, एवरेस्ट, अन्नपूर्णा, धौलागिरि

(B) एवरेस्ट, कंचनजंगा, अन्नापूर्णा, धौलागिरि

(C) कंजनजंगा, धौलागिरि, अन्नपूर्णा, एवरेस्ट

(D) एवरेस्ट, कंचनजंघा, धौलागिरि, अन्नपूर्णा

उत्तर :-**(A)**

Q.5. लघु हिमालय स्थित हैं मध्य में –

(A) शिवालिक और महान हिमालय

(B) ट्रांस हिमालय और महान हिमालय

(C) ट्रांस हिमालय और शिवालिक

(D) शिवालिक और बाह्य हिमालय

उत्तर - **(A)**

Q.6. निम्नलिखित में से उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर के सही क्रम वाली पर्वत श्रेणी कौन-सी हैं ?

(A) पीरपंजाल पर्वत श्रेणी, जास्कर पर्वत श्रेणी, लद्दाख पर्वत श्रेणी, काराकोरम पर्वत श्रेणी

(B) जास्कर पर्वत श्रेणी, पीरपंजाल पर्वत श्रेणी, लद्दाख पर्वत श्रेणी, काराकोरम पर्वत श्रेणी

(C) कारकोरम पर्वत श्रेणी, लद्दाख पर्वत श्रेणी, जास्कर पर्वत श्रेणी, पीरपंजाल पर्वत श्रेणी

(D) पीरपंजाल पर्वत श्रेणी, लद्दाख पर्वत श्रेणी, जास्कर पर्वत श्रेणी, काराकोरम पर्वत श्रेणी

उत्तर **(C)**

Q.7. निम्नलिखित पर विचार कीजिए -

1. अरावली की पहाड़ियाँ 2. सह्याद्रि पर्वत श्रेणी

3. सतपुड़ा पर्वत श्रेणी

उपरोक्त का उत्तर से दक्षिण की ओर सही अनुक्रम कौनसा हैं ?

(A) 2,1,3 (B) 1,2,3

(C) 1,3,2 (D) 2,3,1

उत्तर :- **(C)**

अध्याय – 5

मानसून तंत्र व वर्षा का वितरण

जलवायु

किसी स्थान या क्षेत्र विशेष में लम्बे समय के तापमान, वर्षा, वायुमंडलीय दाब तथा पवनों की दिशा व गति की समस्त दशाओं के योग को जलवायु कहते हैं।

मौसम/मानसून

मौसम या मानसून शब्द की उत्पति अरबी भाषा के "मौसिम" शब्द से हुई है जिसका शाब्दिक अर्थ- पवन की दिशा या दशा हैं।

भारतीय मानसून की सर्वप्रथम व्याख्या अरब यात्री अलमसुदी ने की थी।

भारतीय मानसून को कृषि हेतु जुए की संज्ञा तथा देश के द्वितीय वित्त मंत्री की संज्ञा दी गई है।

मौसम और जलवायु के मध्य अंतर :-

मौसम में वातावरण में अल्पकालिक (मिनट से महीने तक) परिवर्तन होते हैं, जबकि जलवायु दीर्घकालिक परिवर्तन (लगभग 30 वर्ष से अधिक की समयावधि) को कहते हैं।

अधिकांश स्थानों पर मौसम मिनट-दर-मिनट, घंटे-दर-घंटे, और दिन-प्रतिदिन बदल सकता है, जबकि जलवायु एक लंबे समयांतराल पर बदलता है।

भारत में उष्ण कटिबंधीय मानसून जलवायु पायी जाती है। इस जलवायु के अंतर्गत अधिकतम वर्षा ग्रीष्म ऋतु में प्राप्त होती है।

भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक

भारत की जलवायु की प्रभावित करने वाले कारको को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता हैं:-

(1.) स्थिति तथा उच्चावच सम्बन्धी कारक

(2.) वायुदाब एवं पवन सम्बन्धी कारक

(1.) स्थिति तथा उच्चावच सम्बन्धी कारक

(i) अक्षांश

भारतीय मौसम विभाग ने भारत की वार्षिक जलवायु परिस्थितियों के आधार पर भारत के । वर्ष को 4 प्रमुख ऋतुओं में विभाजित किया है।

शीत ऋतु	ग्रीष्म ऋतु	द.पं. मानसून ऋतु	निवर्तन मानसून ऋतु
दिस.-फर.	मार्च-मई	जुलाई-अगस्त	सितम्बर-नवम्बर

इन ऋतुओं के आधार पर भारत की जलवायु को देखा जा सकता है।

I. शीत ऋतु

नवम्बर के अंत से शुरू होकर दिसम्बर से फरवरी के बीच पायी जाने वाली शीत ऋतु के दौरान दिसम्बर तथा जनवरी सबसे ठंडे महीने होने के साथ द्रास घाटी क्षेत्र में सबसे कम तापमान पाया जाता है।

इस ऋतु के दौरान कम तापमान,अधिक दाब उत्तर पूर्व शुष्क पवनें तथा स्वच्छ आकाश पाया जाने से सुहावनी मौसम परिस्थितियों होती हैं।

(i) तापमान

इस ऋतु के दौरान सूर्य के दक्षिण गोलार्द्ध में होने से भारत में तापमान कम पाया जाता है। उत्तरी भारत मं 20 डिग्री सेल्सियस से कम तथा दक्षिण भारत में 20 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान पाया जाता है। 20 डिग्री सेल्सियस की समताप रेखा भारत को 2 समान भागों में बांटती है। दक्षिण भारत में उत्तर भारत की अपेक्षा अधिक तापमान पाया जाता है।

दक्षिण भारत में अधिक तापमान पाए जाने के प्रमुख कारण हैं:-

(i) दक्षिण भारत में जलवायु का समकारी प्रभाव रहने के साथ विषुवत रेखा की निकटता है।

उत्तर भारत में अत्यधिक कम तापमान पाये जाने के निम्नलिखित कारण हैं:-

(i) उत्तरी भारत में महाद्वीपीय प्रभाव रहता है।

(ii) शीत ऋतु के दौरान हिमालय क्षेत्र में होने वाले हिमताप के कारण चलने वाली शीत लहरें उत्तर भारत के तापमान को कम कर देती है।

(iii) कैस्पियन सागर तथा तुर्कमेनिस्तान से चलने वाली ठंडी पवनों के कारण उत्तरी भारत में शीत लहरें चलना प्रारम्भ होती हैं जो तापमान को कम कर देती हैं।

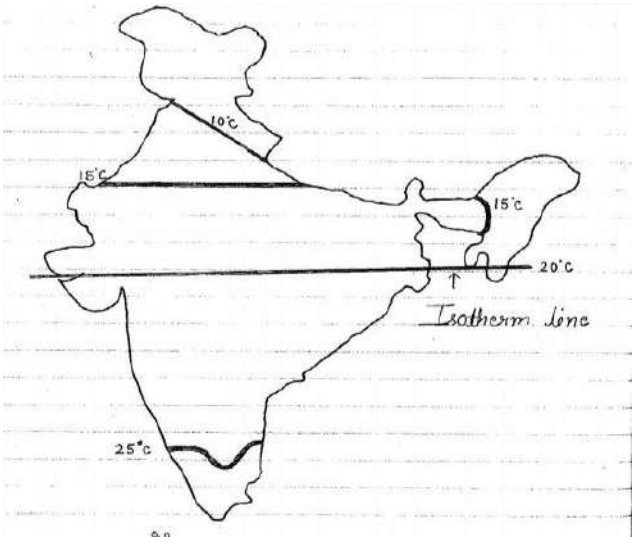

(ii) दाब

इस ऋतु के दौरान सम्पूर्ण भारत पर उच्च दाब परिस्थितियां पायी जाती हैं। उत्तरी पश्चिमी भारत में सबसे प्रबल 1019 एम. बी. उच्च दाब परिस्थितियों का निर्माण होता है। भारत से 1013 एम. बी. से 1019 एम.बी. की उच्च दाब परिस्थितियां पायी जाती हैं।

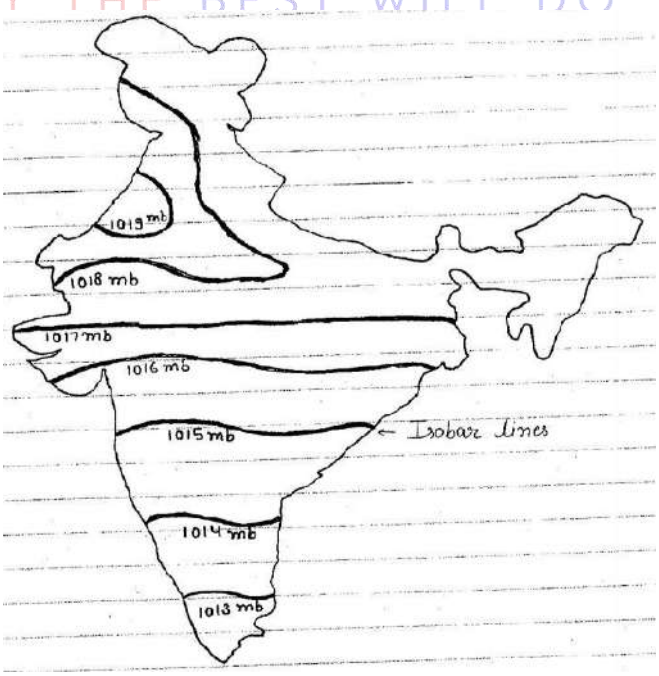

(iii) पवन

मानसून उत्पत्ति से सम्बन्धित प्रमुख अवधारणाएं

I. संस्थापित परिकल्पना (Classical Hypothesis)

- यह अवधारणा स्थल व जल के वितरण तथा इनकी ताप ग्रहण व ताप मुक्ति के सन्दर्भ में भिन्न गुणों से सम्बन्धित हैं ।
- स्थली भाग शीघ्र गर्म व ठण्डे होते हैं , जबकि जल देर से गर्म व ठण्डा होता है ।
- ग्रीष्म ऋतु में स्थल के शीघ्र गर्म हो जाने से न्यून वायुदाब बन जाता हैं , जबकि जल शीघ्र ताप ग्रहण न कर पाने के कारण ठण्डा रहता है तथा वहाँ उच्च दाब बन जाता हैं ।
- अत : इस ऋतु में जल से स्थल की ओर पवनें चलने लगती हैं ।
- जलीय क्षेत्र से उद्गम होने के कारण ये पवनें आर्द्र होती हैं । इसलिये इन पवनों से व्यापक वर्षा होती हैं ।
- शीत ऋतु में यह प्रक्रिया विपरीत हो जाने से पवनों की दिशा भी विपरीत हो जाती हैं । शीत ऋतु में स्थली भागों के शीघ्र ठण्डे हो जाने से उच्च दाब तथा जलीय क्षेत्रों के अपेक्षाकृत गर्म रहने से वहाँ निम्न वायुदाब बन जाता हैं ।
- अत : पवनें स्थल से जल की ओर चलने लगती हैं । इन पवनों का उद्गम स्थल से होने के कारण से शुष्क होती हैं । अतः सामान्यत : इन पवनों से वर्षा नहीं होती ।
- इस प्रकार ऋतुओं के अनुसार बदली हुई परिस्थितियों के कारण क्रमश : ग्रीष्मकालीन तथा शरदकालीन मानसून की उत्पत्ति होती हैं ।

2. अन्त : उष्ण कटिबन्धीय अभिसरण परिकल्पना (Inter Tropical Convergence Hypothesis)

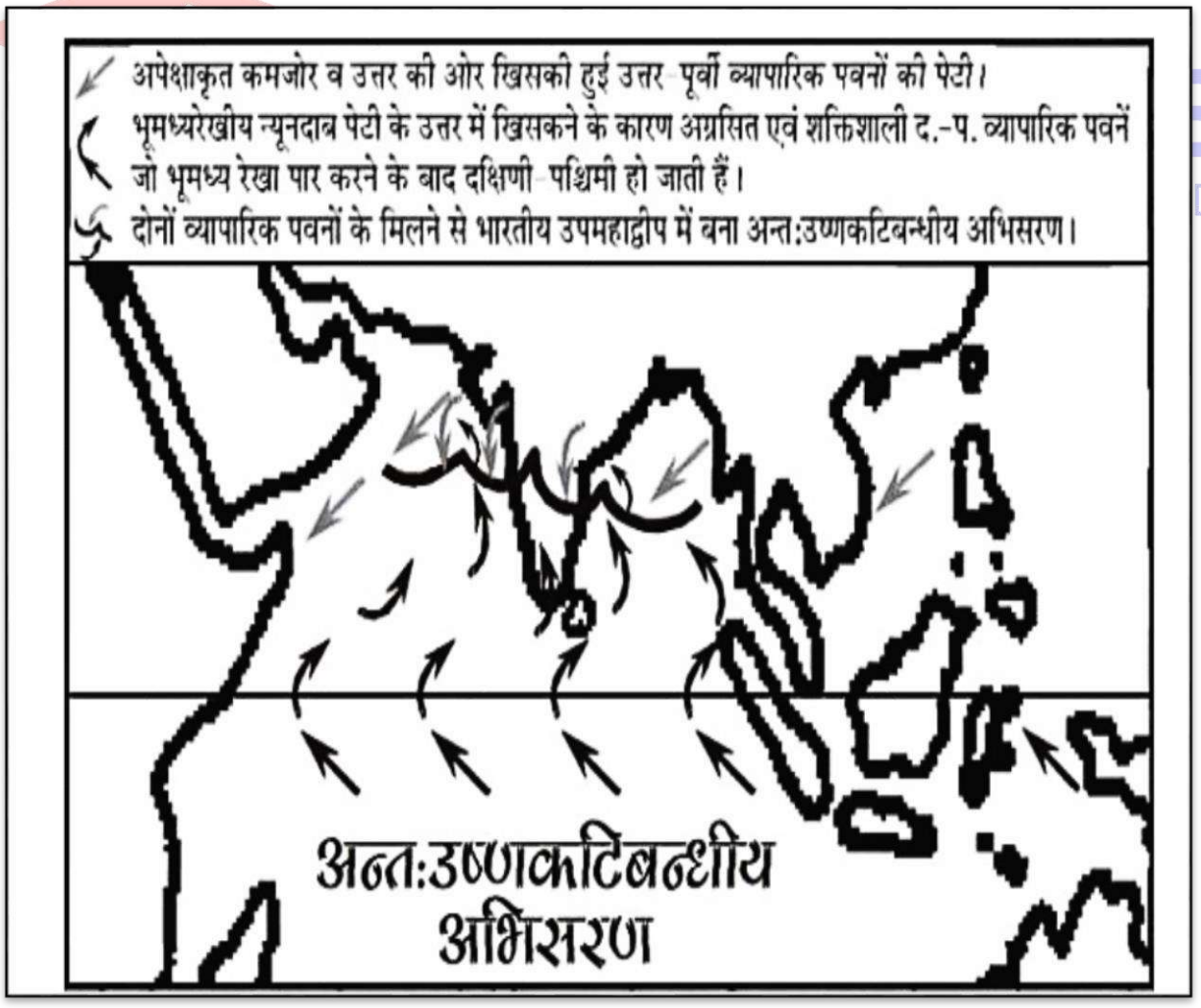

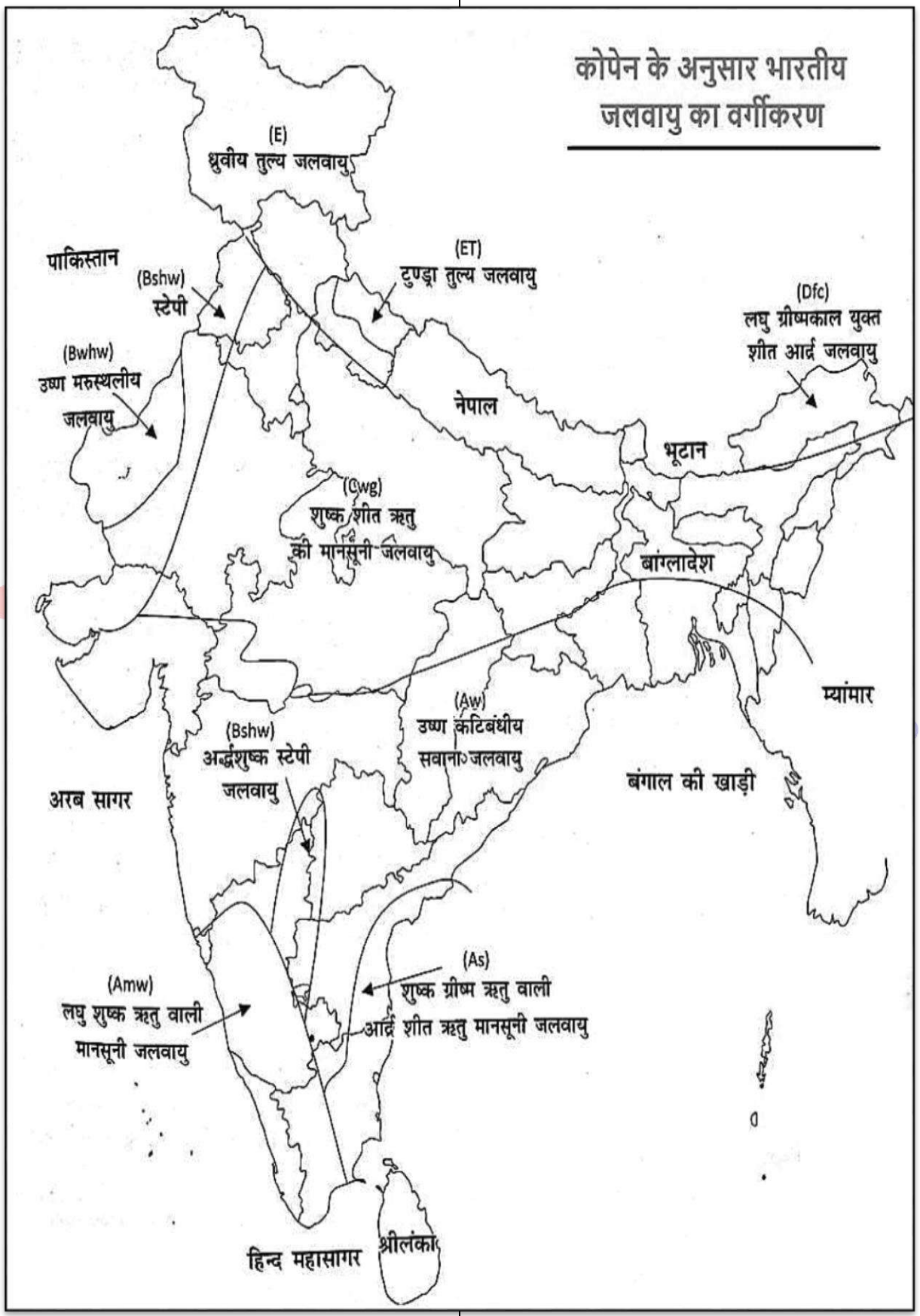
कोपेन के अनुसार भारतीय
जलवायु का वर्गीकरण
(E)
ध्रुवीय तुल्य जलवायु
(ET)
टुण्ड्रा तुल्य जलवायु
पाकिस्तान
(Bshw)
स्टेपी
(Bwhw)
उष्ण मरुस्थलीय
जलवायु
(Dfc)
लघु ग्रीष्मकाल युक्त
शीत आर्द्र जलवायु
नेपाल
भूटान
(Cwg)
शुष्क शीत ऋतु
की मानसूनी जलवायु
बांग्लादेश
म्यांमार
(Aw)
उष्ण कटिबंधीय
सवाना जलवायु
(Bshw)
अर्द्धशुष्क स्टेपी
जलवायु
अरब सागर
बंगाल की खाड़ी
(As)
शुष्क ग्रीष्म ऋतु वाली
आर्द्र शीत ऋतु मानसूनी जलवायु
(Amw)
लघु शुष्क ऋतु वाली
मानसूनी जलवायु
हिन्द महासागर
श्रीलंका

जलवायु	प्रकार	क्षेत्र व विशेषता
I. लघु शुष्क ऋतु सहित मानसूनी जलवायु	AMW	• ऐसी जलवायु मुम्बई के दक्षिण में पश्चिमी तटीय क्षेत्रों में पायी जाती है। इन क्षेत्रों में दक्षिण-पश्चिमी मानसून से ग्रीष्म ऋतु में 250-300 सेमी. से अधिक वर्षा होती है। • मालाबार एवं कोंकण तट, गोवा के दक्षिण तथा पश्चिमी घाट पर्वत का पश्चिमी ढाल, अंडमान-निकोबार द्वीप समूह
उष्ण कटिबंधीय सवाना जलवायु प्रदेश	AW	• यह जलवायु कोरोमण्डल एवं मालाबार तटीय क्षेत्रों के अतिरिक्त प्रायद्वीपीय पठार के अधिकांश भागों में पायी जाती है। • अर्थात् यह जलवायु कर्क रेखा के दक्षिण में स्थित प्रायद्वीपीय भारत के अधिकांश भागों में पायी जाती है। • यहाँ सवाना प्रकार की वनस्पति पायी जाती है। इस प्रकार के प्रदेश में ग्रीष्मकाल में दक्षिण-पश्चिम मानसून से लगभग 75 सेमी. वर्षा होती है जबकि शीत काल सूखा रहता है।
शुष्क ग्रीष्म ऋतु एवं आर्द्र शीत ऋतु मानसूनी जलवायु	AS	• यहाँ शीतकाल में वर्षा होती है और ग्रीष्म ऋतु शुष्क रहती है। • यहाँ शीत ऋतु में उत्तर-पूर्वी मानसून (लौटते हुए मानसून) से अधिकांश वर्षा होती है। वर्षा ऋतु की मात्रा शीतकाल में लगभग 75-100 सेमी. होती है • इसके अन्तर्गत तटीय तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश के सीमावर्ती प्रदेश आते हैं।
अर्द्ध शुष्क स्टेपी जलवायु	BShw	• यहाँ ग्रीष्म काल में 30-60 सेमी. वर्षा होती है। • शीत काल में वर्षा का अभाव रहता है। • यहाँ स्टेपी प्रकार की वनस्पति पायी जाती है। • इसके अन्तर्गत मध्यवर्ती राजस्थान, पश्चिमी पंजाब, हरियाणा, गुजरात के सीमावर्ती क्षेत्र एवं पश्चिमी घाट के वृष्टि छाया प्रदेश शामिल हैं।
उष्ण मरुस्थलीय जलवायु	BWhw	• यहाँ वर्षा काफी कम (30 सेमी. से भी कम) होती है तापमान अधिक रहता है। • यहाँ प्राकृतिक वनस्पति कम होती है एवं काँटेदार मरुस्थलीय वनस्पति पायी जाती है। • इस प्रदेश के अंतर्गत राजस्थान का पश्चिमी क्षेत्र उत्तरी, गुजरात एवं हरियाणा का दक्षिणी भाग शामिल हैं।
शुष्क शीत ऋतु की मानसूनी जलवायु	Cwg	• इस प्रकार की जलवायु गंगा के अधिकांश मैदानी भागों पूर्वी राजस्थान, असम और मालवा के पठारी भागों में पायी जाती है।

अध्याय – 5

प्रमुख नदियाँ एवं झीलें

भारत नदियों का देश हैं। भारत के आर्थिक विकास में नदियों का महत्त्वपूर्ण स्थान हैं । नदियाँ यहाँ आदिकाल से ही मानव की जीविकोपार्जन का साधन रही हैं ।

- भारत में 4000 से भी अधिक छोटी व बड़ी नदियाँ हैं, जिन्हें 23 वृहत् तथा 200 लघु नदी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता हैं ।
- किसी नदी के रेखीय स्वरूप को प्रवाह रेखा कहते हैं। कई प्रवाह रेखाओं के योग को प्रवाह संजाल (Drainage Network) कहते हैं ।

अपवाह व अपवाह तंत्र (Drainage and Drainage System)

निश्चित वाहिकाओं (Channels) के माध्यम से हो रहे जल प्रवाह को अपवाह (Drainage) तथा इन वाहिकाओं के जाल को अपवाह तंत्र (Drainage System) कहा जाता हैं ।

जलग्रहण क्षेत्र (Catchment Area)-

एक नदी विशिष्ट क्षेत्र से अपना जल बहाकर लाती हैं जिसे जलग्रहण क्षेत्र कहते हैं ।

अपवाह द्रोणी –

एक नदी व उसकी सहायक नदियों द्वारा अपवाहित क्षेत्र को अपवाह क्षेत्र कहते हैं ।

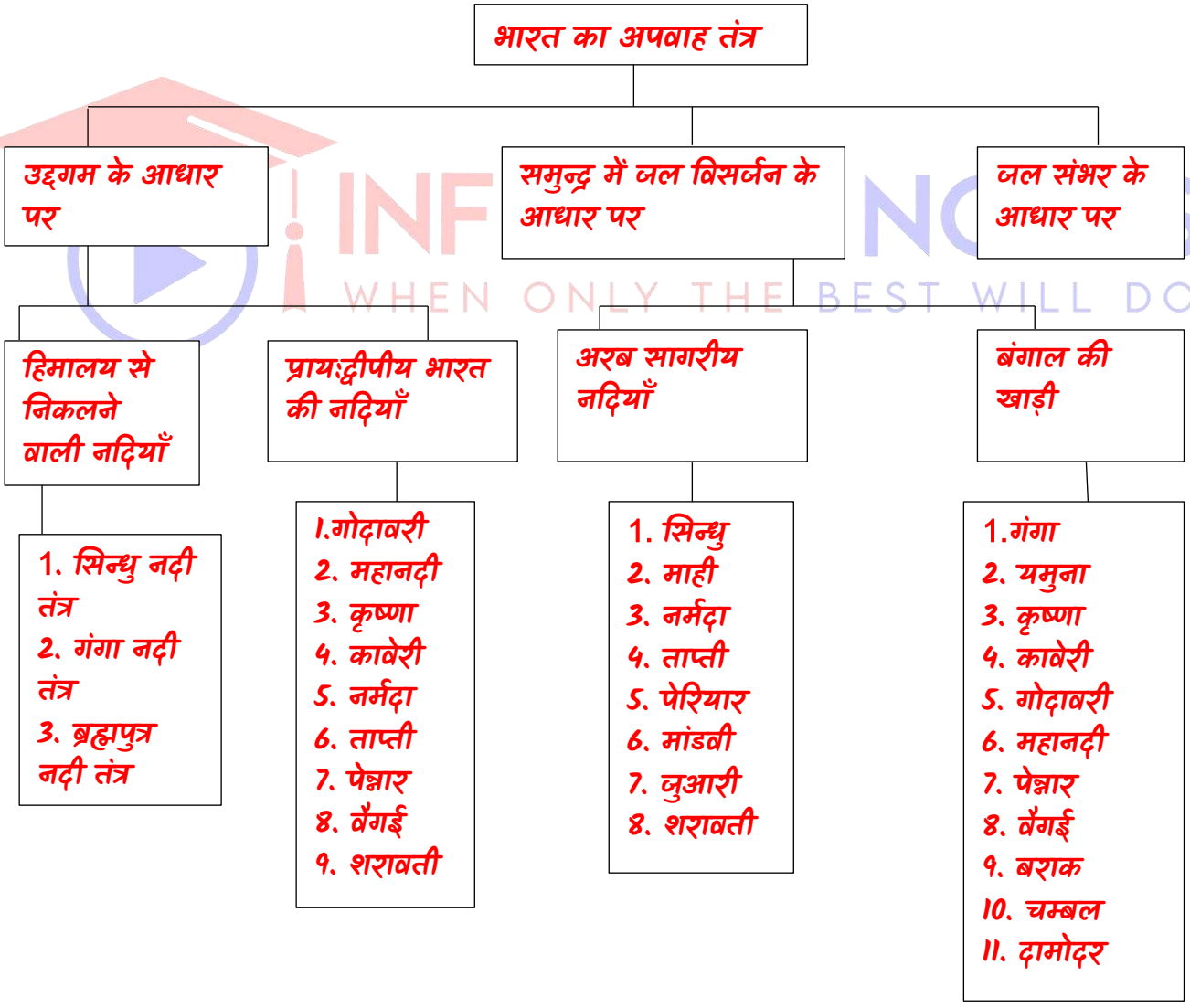

- कुल अपवाह क्षेत्र का लगभग 77 प्रतिशत भाग, जिसमें गंगा, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा आदि नदियाँ शामिल हैं

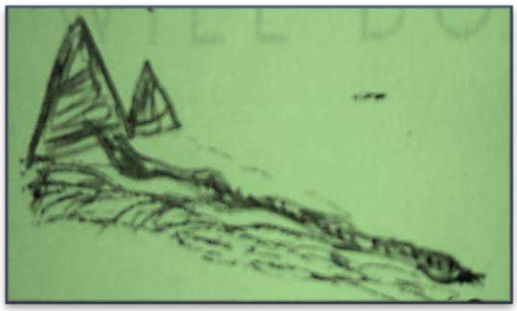

। बंगाल की खाड़ी में जल विसर्जित करती हैं,

- जबकि 23% भाग जिसमें सिन्धु, नर्मदा, तापी, माही व पेरियार नदियाँ शामिल हैं । अपना जल अरब सागर में गिराती हैं ।
- नदी अपना जल किसी विशेष दिशा में बहाकर समुद्र में मिलाती हैं, यह कई कारकों पर निर्भर करता हैं । जैसे भूतल का ढ़ाल, भौतिक संरचना, जल प्रवाह की मान एवं जल का वेग ।

जल संभर क्षेत्र / Wateshad area

जल संभर क्षेत्र के आकार के आधार पर भारतीय अपवाह श्रेणियों को तीन भागों में बाँटा गया हैं

1. प्रमुख नदी श्रेणी: जिनका अपवाह क्षेत्र 20000 वर्ग किलोमीटर से अधिक हैं । इसमें 14 नदियाँ श्रेणियाँ शामिल हैं । जैसे - गंगा, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, तापी, नर्मदा, माही, पेन्नार, साबरमती , बराक आदि ।
2. मध्यम नदी श्रेणी: जिनका अपवाह क्षेत्र 2000 से 20,000 वर्ग किलोमीटर के बीच हैं । इसमें 44 नदी श्रेणिया हैं, जैसे - कालिंदी, पेरियार, मेघना आदि ।
3. लघु नदी श्रेणी: जिनका अपवाह क्षेत्र 2000 वर्ग किलोमीटर से कम हैं । इसमें न्यून वर्षा के क्षेत्रों मे बहने वाली बहुत सी नदियाँ शामिल हैं ।

अपवाह प्रवृत्ति

1.पूर्ववर्ती अथवा प्रत्यानुवर्ती अपवाह –

- वे नदियाँ, जो हिमालय पर्वत के निर्माण के पूर्व प्रवाहित होती थी तथा हिमालय के निर्माण के पश्चात् महाखण्ड बनाकर अपने पूर्व मार्ग से प्रवाहित होती हैं । जैसे गंगा, ब्रह्मपुत्र, सतलुज, सिन्धु

2. **अनुवर्ती नदियाँ –**

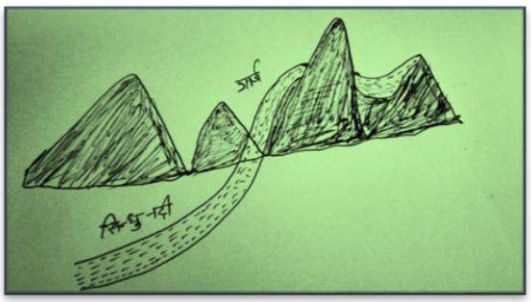

- वे नदियाँ, जो सामान्य ढाल की दिशा में बहती है। । प्रायद्वीपीय भारत की अधिकतर नदियाँ अनुवर्ती नदियाँ हैं ।

3. परवर्ती नदियाँ –

- चम्बल, सिंध, बेतवा, सोन आदि नदियाँ गंगा और यमुना में जाकर समकोण पर मिलती हैं । गंगा अपवाह तंत्र के परवर्ती अपवाह का उदाहरण हैं ।

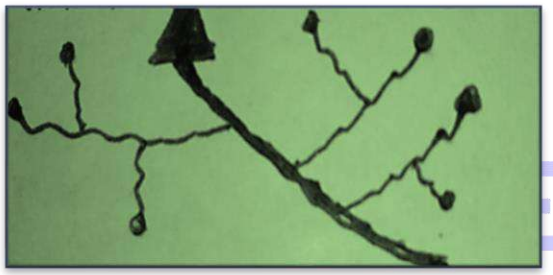

4. द्रुमाकृतिक अपवाह –

- वह अपवाह जो शाखाओं में फैला हो, जो द्विभाजित हो तथा वृक्ष के समान प्रतीत हो उसे द्रुमाकृतिक अपवाह कहते हैं ।

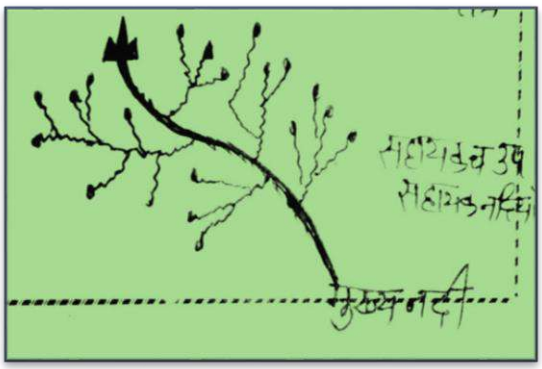

5. जालीनुमा अपवाह –

- यह एक आयताकार प्रतिरूप हैं । जहाँ मुख्य नदियाँ एक दूसरे के समान्तर बहती हैं और सहायक नदियाँ समकोण पर पायी जाती हैं ।

कथन (A) : हिमालय से निकलने वाली नदियाँ सतत वाहिनी हैं ।

कारण (R) : हिमालयन नदियों का उद्गम स्रोत हिमानियों में स्थित है ।

(1) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की पुष्टि करता है ।

(2) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की पुष्टि नहीं करता है ।

(3) (A) सही है और (R) गलत है

(4) (A) गलत है और (R) सही है

उत्तर :- b

इंड़ो ब्रह्म नदी:- *भू-वैज्ञानिक मानते है, कि* ***मायोसीन*** *कल्प में लगभग 2.4 करोड़ से 50 लाखों वर्ष पहले एक विशाल नदी थी । जिसे शिवालिक या इंड़ो - ब्रह्म नदी कहा गया हैं ।*

इंडो ब्रह्म नदी के तीन मुख्य अपवाह तंत्र –

1.पश्चिम में सिन्धु और इसकी पाँच सहायक नदियाँ

2.मध्य में गंगा और हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ

3.पूर्व में ब्रह्मपुत्र का भाग व हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ

सिन्धु नदी तंत्र

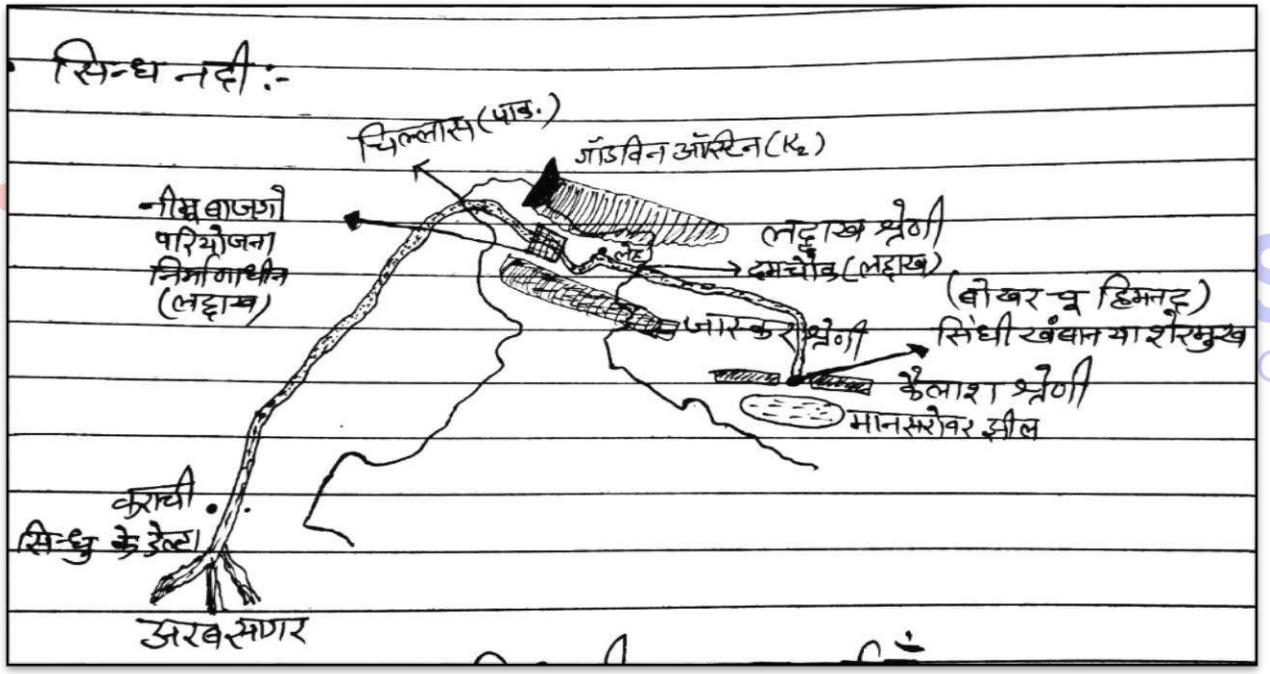

- *यह विश्व की सबसे बड़ी नदी श्रेणियों में से एक हैं, जिसका क्षेत्रफल 11 लाख, 65 हजार वर्ग km हैं । भारत में इसका क्षेत्रफल 3,21,289 वर्ग किमी हैं ।*
- *सिन्धु नदी की कुल लंबाई 2,880 किमी. हैं। परंतु भारत में इसकी लम्बाई केवल 1,114 km हैं । भारत में यह हिमालय की नदियों में सबसे पश्चिमी नदी हैं ।*
- *सिन्धु नदी का उद्गम तिब्बती क्षेत्र में स्थित कैलाश पर्वत श्रेणी (मानसरोवर झील) में बोखर-चू के निकट एक ग्लेशियर (हिमनद) से होता हैं । तिब्बत में इसे शेर मुख अथवा सिंगी खंबान कहते हैं ।*
- *सतलुज, व्यास, रावी, चिनाब और झेलम सिन्धु नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ हैं ।*
- *अन्य सहायक नदियाँ – जास्कर, स्यांग, शिगार, गिलगिट, श्योक, हुंजा, कुर्रम, नुबरा, गास्टिंग व द्रास, गोमल ।*
- *अंततः यह नदी अटक (पंजाब प्रांत, पाकिस्तान) के निकट पहाड़ियों से बाहर निकलती हैं । जहाँ दाहिने तट पर काबुल, तोची, गोमल, विबोआ और संगर नदियाँ इसमें मिलती हैं ।*
- *यह नदी दक्षिण की ओर बहती हुई मिठनकोट के निकट पंचनद का जल प्राप्त करती हैं । पंचनद नाम पंजाब की पाँच मुख्य नदियों सतलुज, व्यास,*

रावी, चिनाब, झेलम को संयुक्त रूप से दिया गया हैं ।

सिन्धु की प्रमुख सहायक नदियाँ : -

1. सतलुज नदी
2. व्यास नदी
3. रावी नदी
4. चिनाब नदी
5. झेलम नदी

सिन्धु नदी तंत्र

सिन्धु जल संधि (1960)

तीन पूर्वी नदियों - व्यास, रावी, सतलुज का नियंत्रण भारत तथा 3 पश्चिमी नदियों सिन्धु, झेलम, चेनाब का नियंत्रण पाकिस्तान को दिया गया -

1.व्यास, रावी, सतलुज 80% पानी भारत
20% पानी पाकिस्तान

2.सिन्धु, झेलम, चिनाब 80% पानी पाकिस्तान
20% पानी भारत

सतलज नदी -

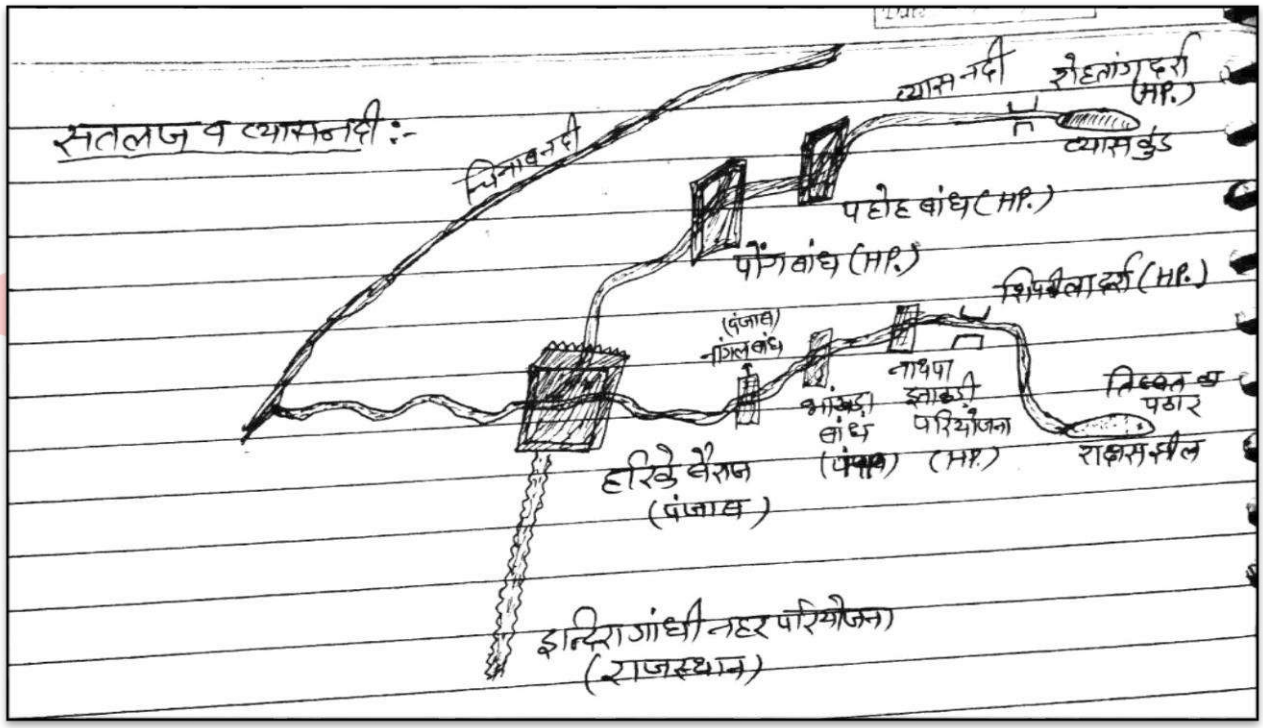

- यह एक पूर्ववर्ती नदी हैं जो तिब्बत में लगभग 4,555 मीटर की ऊँचाई पर मानसरोवर के निकट राक्षस ताल झील से निकलती हैं । जहाँ इसे **लॉगचेन खंबाब** के नाम से जाना जाता हैं ।
- यह उत्तर - पश्चिम दिशा में बहते हुए इंडो - तिब्बत सीमा के समीप **शिपकी ला दर्रे** के पास भारत में प्रवेश करने से पहले लगभग 400 km तक सिन्धु नदी के समान्तर बहते हुए अंत में चिनाब नदी में मिल जाती हैं ।
- प्रवाह क्षेत्र- हिमाचल प्रदेश, पंजाब
- सतलुज, सिन्धु नदी की महत्त्वपूर्ण सहायक नदी हैं ।
- इस नदी पर हिमाचल प्रदेश में नाथपा झाकड़ी परियोजना तथा भाखड़ा बाँध व इसके पीछे गोविन्द साग़र जलाशय तथा पंजाब के रोपड़ में नांगल बाँध बना हुआ हैं।

व्यास नदी (विपाशा नदी)

- यह सिन्धु की एक अन्य महत्त्वपूर्ण सहायक नदी हैं । रोहतांग दर्रे के निकट व्यास कुंड से निकलती हैं।
- प्रवाह क्षेत्र- हिमाचल प्रदेश, पंजाब
- यह नदी कुल्लू घाटी से गुजरती हैं । तथा धौलाधर श्रेणी में काती और लारगी में महाखण्ड का निर्माण करती हैं ।

- यह पंजाब के मैदान में प्रवेश करती है जहाँ हरिके बैराज के पास सतलुज नदी में जा मिलती है ।

रावी नदी (परुष्णी नदी)

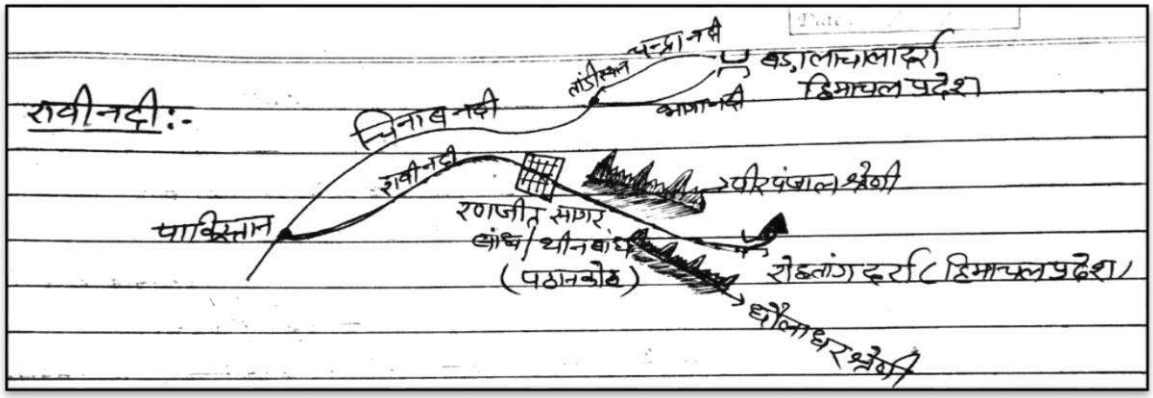

- यह नदी सिन्धु की अन्य महत्त्वपूर्ण सहायक नदी हैं जो हिमालय की कुल्लू की पहाड़ियों में स्थित रोहतंग दर्रे के पश्चिम से निकलती हैं तथा चंबा घाटी से होकर बहती हैं ।
- प्रवाह क्षेत्र- हिमाचल प्रदेश, पंजाब
- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले व सराय सिन्धु के निकट चिनाब नदी में मिलने से पहले यह नदी पीरपंजाल के दक्षिण-पूर्वी भाग व धौलाधर के बीच से प्रवाहित होती हैं ।
- इस नदी पर पठानकोट(पंजाब) के निकट थीन बाँध / रणजीत सागर बाँध बना हुआ है ।

चिनाब नदी (अस्किनी)

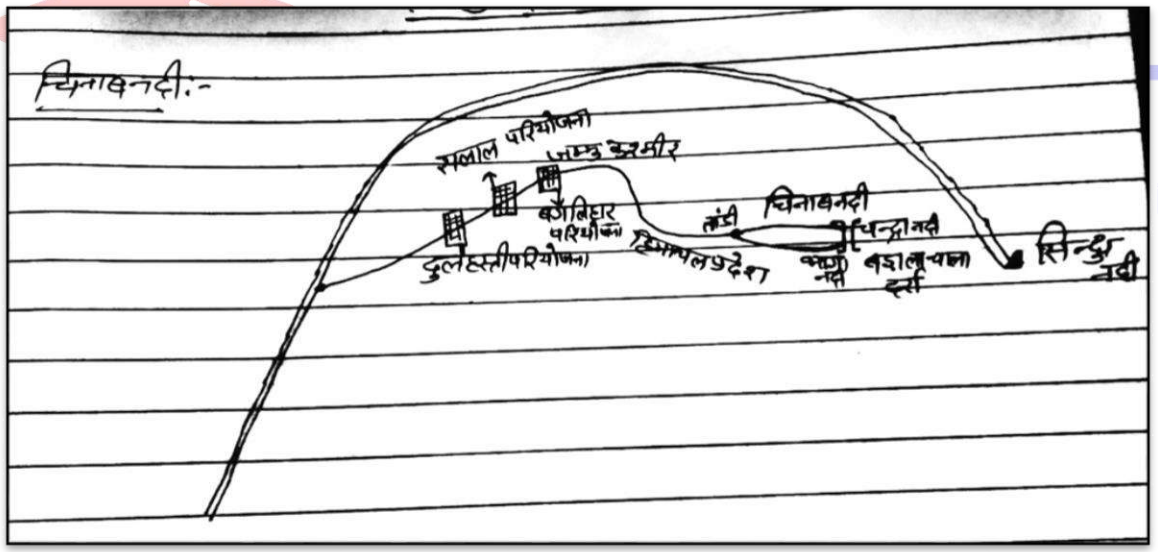

- यह सिन्धु की सबसे बड़ी सहायक नदी हैं ।
- इसका उद्गम हिमाचल प्रदेश के निकट बड़ालाचला दर्रे से चंद्रा और भागा नामक दो सरिताओं के मिलने से होता हैं ये सरिताएँ हिमाचल प्रदेश में केलांग के निकट तांड़ी में आपस में मिलती हैं ।
- इसलिए इसे चंद्रभागा के नाम से भी जाना जाता हैं ।
- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले भारत में इस नदी का बहाव क्षेत्र 1,180 कि.मी. हैं ।
- प्रवाह क्षेत्र- हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर
- इस नदी पर जम्मू कश्मीर में बगलीहार परियोजना, दुलहस्ती परियोजना व सलाल परियोजना का निर्माण किया गया हैं ।

झेलम नदी (वितस्ता)

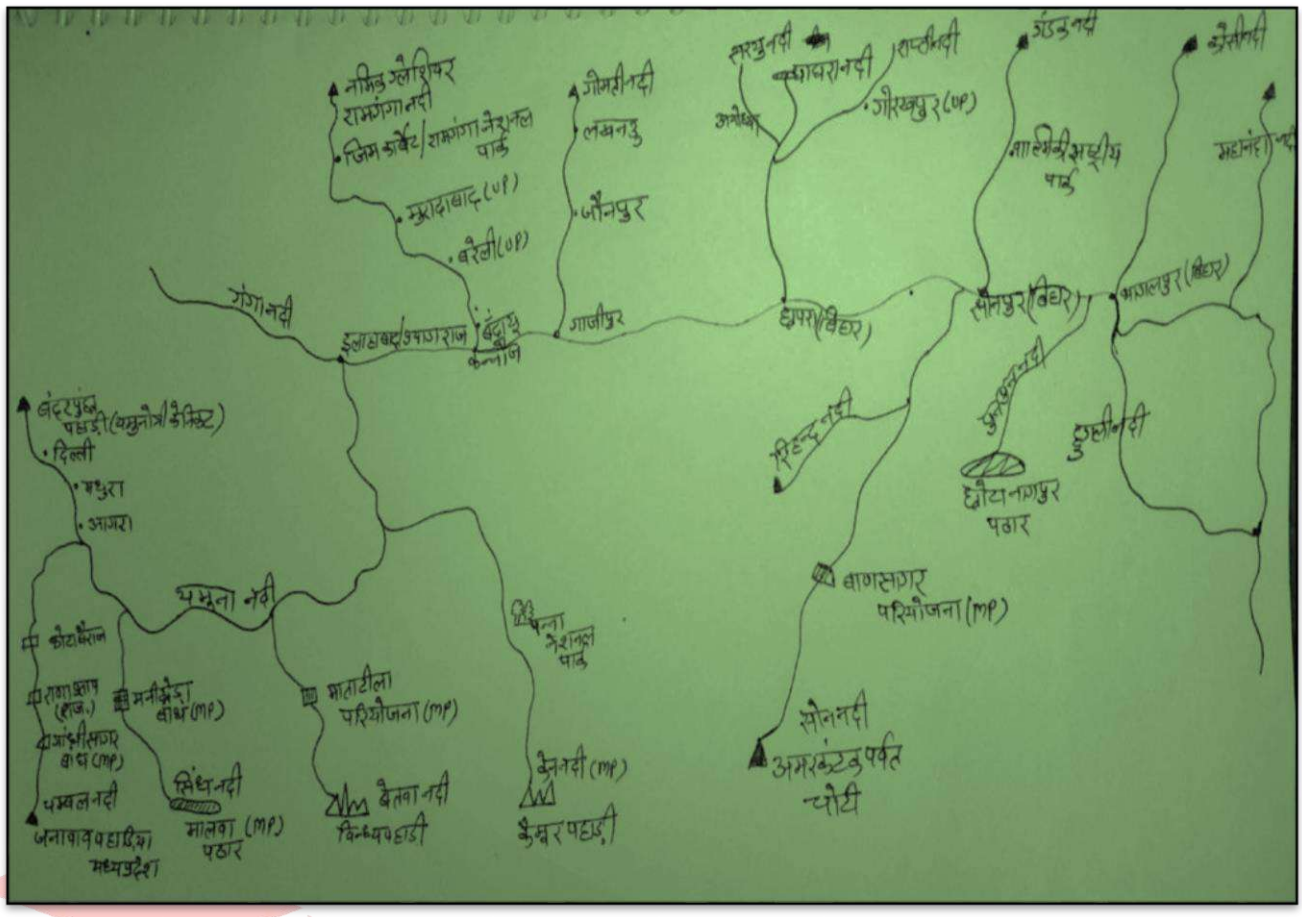

गंगा की प्रमुख सहायक नदियाँ

दाएँ ओर से	बाएँ ओर से
यमुना	रामगंगा
सोन	गोमती
पुनपुन	घाघरा
	गंडक
	कोसी
	महानंदा

यमुना नदी –

- इस नदी का उद्गम उत्तराखण्ड में बदरपूंछ श्रेणी की पश्चिमी ढाल पर स्थित यमुनोत्री हिमनद से हुआ है।
- यमुना नदी गंगा की सबसे पश्चिमी व सबसे लम्बी नदी हैं। जो गंगा से इलाहाबाद में आकर मिलती है ।
- प्रायद्वीप पठार से निकलने वाली चंबल, सिंध, बेतवा, केन इसके दाहिने तट पर मिलने वाली सहायक नदियाँ है इसके बाएँ तट पर हिंडन, रिंद, सेंगर, वरुणा आदि नदियाँ मिलती हैं।
- चम्बल नदी मध्यप्रदेश के मालवा पठार में महू के निकट निकलती है तथा राजस्थान के कोटा में बहते हुए उत्तरप्रदेश में यमुना से आकर मिलती है यह अपनी 'उत्खात् भूमि' (Badlond Topography) के लिए प्रसिद्ध है।

यमुना की सहायक नदियाँ

चम्बल

- उद्गमः- जानापाव की पहाड़ी मेहूं (MP)

NOTE- राजस्थान की एकमात्र बारहमासी नदी

- उपनाम चर्मवती, राजस्थान की कामधेनु
- राजस्थान का एकमात्र हैंगिंग ब्रिज (कोटा) इसी नदी पर हुआ है । इस नदी पर 4 बाँध बने हुए है (1) गांधी सागर (MP) 2. राणा प्रताप सागर (चित्तौड़गढ़, राजस्थान) 3. कोटा बैराज (कोटा, राजस्थान) जवाहरसागर (कोटा, राजस्थान)

Q.3. भारत में उत्तर से दक्षिण की ओर जाते हुए नीचे दी गई नदियों का निम्नलिखित में से सही अनुक्रम कौन-सा हैं ?

(A) श्योक-जास्कर- स्पीति -सतलुज

(B) श्योक - स्पीति - जस्कर – सतलुज

(C) जास्कर – श्योक – सतलुज – स्पीति

(D) जास्कर – सतलुज -श्योग – स्पीति

उत्तर (A)

Q.4. निम्नलिखित में से कौन-सी, ब्रहपुत्र की सहायक नदी हैंनदियाँ हैं ?

I. दिबांग

2. कामेंग

3. लोहित

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए -

(A) केवल 2 और 3

(B) केवल I

(C) केवल I और 3

(D) I, 2 और 3

उत्तर (D)

Q.5. निम्नलिखित नदियों में से कौन सी एक लद्दाख एवं जास्कर पर्वत श्रेणियों के मध्य से प्रवाहित होती हैं ?

(A) सिन्धु

(B) चिनाब

(C) झेलम

(D) सतलुज

उत्तर (A)

6. गंगा नदी को बांग्लादेश में किस नाम से जाना जाता हैं ?

(A) पद्मा

(B) जमुना

(C) मेघना

(D) सांगपो

उत्तर (A)

7. विश्व का सबसे बड़ा नदी द्वीप 'माजुली' का निर्माण करने वाली नदी हैं?

(A) कृष्णा

(B) कावेरी

(C) गोदावरी

(D) ब्रह्मपुत्र

उत्तर (D)

8. वे दो प्रमख नदियाँ कौन-सी हैं जो अमरकटक पठार से निकलती हैं परन्तु अलग-अलग दिशाओं में बहती हैं?

(A) चम्बल और बेतवा

(B) चम्बल और सोन

(C) नर्मदा और सोन

(D) नर्मदा और बेतवा

उत्तर (C)

9. निम्नलिखित में से कौन-सी नदी ज्वारनदमुख का निर्माण करती हैं ?

(A) राप्ती

(B) महानदी

(C) नर्मदा

(D) स्वर्णरेखा

उत्तर (C)

10. दक्षिण भारत की नदियों में सबसे लम्बी नदी हैं?

(A) गोदावरी

(B) कृष्णा

(C) कावेरी

(D) नर्मदा

उत्तर (A)

नोट – प्रिय उम्मीदवारों, यहाँ हमने केवल SAMPLE ही दिया है, पूरा टॉपिक नही दिया है। यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल कीजिए या लिंक पर क्लिक करें। दोस्तों, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "RPSC RAS (PRE.)" की परीक्षा_ में पूर्ण संभव मदद करेंगे और आप "INFUSION NOTES" के साथ इस परीक्षा में जरूर सफल होंगे, धन्यवाद।

RAS Pre. 2021 की परीक्षा में हमारे नोट्स में से 74 प्रश्न आये थे, जबकि cutoff मात्र 64 प्रश्न पर गयी थी।

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 7014366728,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
REET (लेवल -I, 2)	2021	98 (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like REET, UPSC, SSC Etc.

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. 2021 – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

FREE SAMPLE

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें- 7014366728, 8233195718, 9694804063, 8504091672

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/ras-pre-notes
PHONE NUMBER	+918504091672 9887809083 +918233195718 9694804063
TELEGRAM	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें	https://wa.link/6r99q8

अध्याय – 1
अर्थशास्त्र की मूलभूत अवधारणायें

परिचयः-

- Economics (अर्थशास्त्र) शब्द एक Greek word ' Oikonomia ' से उत्पन्न हुआ है ।
- Oikonomia शब्द Oikos and Nomos दो शब्दों से मिलकर बना है ।
- Oikos का अर्थ गृह अथवा परिवार जबकि Nomos का का अर्थ है प्रबंधन । अर्थात् Oikonomia गृह प्रबंधन की प्रक्रिया के अध्ययन से संबंधित है ।
- यह कहा जा सकता है कि अर्थशास्त्र भी गृह प्रबंधन की इसी प्रक्रिया का अध्ययन करता है।
- यह इस बात का अध्ययन करता है कि किस प्रकार एक परिवार अपने सीमित संसाधनों का प्रयोग कर अपने व्यय को पूरा करता है , परन्तु यह अर्थशास्त्र की सबसे साधारण परिभाषा है । अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि अर्थशास्त्र एक विषय है , जो वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन वितरण एव उपभोग की प्रक्रिया का अध्ययन करता है ।
- अर्थशास्त्र की विषय वस्तु अर्थव्यवस्था है एवं वस्तुओं तथा सेवाओं के वितरण एवं उपभोग से ही अर्थव्यवस्था का निर्माण होता है ।
- एडम स्मिथ (Adam Smith: 1723-1790) को अर्थशास्त्र का जनक (Father of Economics) कहा जाता है।
- उनकी पुस्तक द वेल्थ ऑफ नेशन्स (The wealth of Nations : 1776) में अर्थशास्त्र को धन का विज्ञान कहा गया है।
- भारतीय अर्थशास्त्र का जनक कौटिल्य को माना जाता है।

अर्थशास्त्र किसे कहते हैं?

- अर्थशास्त्र का अर्थ होता है धन संबंधी एवम शास्त्र का अर्थ होता है अध्ययन। अंततः धन से संबंधित अध्ययन की प्रणाली को ही हम अर्थशास्त्र कहते हैं।
- अर्थशास्त्र के अंतर्गत उपभोग, विनिमय, वितरण, आदि का अध्ययन किया जाता है।
- परंतु जैसे-जैसे देश की अर्थव्यवस्था मे परिवर्तन होने के कारण अर्थशास्त्र के अंतर्गत अनेक नई शाखाएं जोड़ी गई है
  - जैसे जनकल्याण, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, विदेशी विनिमय इत्यादि को धन के अंतर्गत रखा गया है।
  - अर्थशास्त्र का विषय है जहाँ हम आर्थिक सिद्धांतों को पढ़ते हैं आर्थिक वस्तुएँ सेवाओं से जुड़ी हुई आर्थिक गतिविधियों का अध्ययन करते हैं ताकि आर्थिक कल्याण से जुड़ी आर्थिक निर्णय तक पहुँच सके।
  - मनुष्य की आर्थिक गतिविधियों के अध्ययन को ही अर्थशास्त्र कहा जाता है।
  - मनुष्य अपने जीवन के अंदर अनेक प्रकार की आर्थिक क्रियाएं करता रहता है इन्हें अर्थशास्त्र के अंतर्गत रखा जाता है।

अर्थव्यवस्था किसे कहते हैं?

- अर्थव्यवस्था अर्थशास्त्र का व्यवहार है, अर्थशास्त्र के अध्ययन को जब उपभोग मे लाया जाता है तो उसे अर्थव्यवस्था कहते है।
- अर्थशास्त्र के व्यावहारिक अध्ययन को ही अर्थव्यवस्था कहा जाता है।
- अर्थव्यवस्था वह काल्पनिक क्षेत्र है जहाँ आर्थिक वस्तुएँ सेवाओं के माध्यम से आर्थिक गतिविधियों का निष्पादन किया जाता है।
- जब हम किसी देश को उसकी समस्त आर्थिक क्रियाओं के संदर्भ में परिभाषित करते हैं तो उसे अर्थव्यवस्था कहते हैं।

अर्थशास्त्र और अर्थव्यवस्था में अंतर?:-

अर्थशास्त्र	अर्थव्यवस्था
अर्थशास्त्र के अंतर्गत विषय और सिद्धांतों का अध्ययन किया जाता है	अर्थव्यवस्था के अंतर्गत व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।
अर्थशास्त्र केवल	अर्थव्यवस्था निष्पादन (Execution) की

अध्ययन का क्षेत्र है	भूमिका निभाती है।
अर्थशास्त्र के पिता एडम स्मिथ को माना जाता है इनकी किताब (The Wealth of nations) मे अर्थव्यवस्था का विस्तार किया है।	जब हम किसी देश को उसकी समस्त आर्थिक क्रियाओं के संदर्भ में परिभाषित करते है तो उसे अर्थव्यवस्था कहते हैं ।
अर्थशास्त्र की दो शाखाएँ हैं- (i) व्यष्टि अर्थशास्त्र (Micro economics) (ii) समष्टि अर्थशास्त्र (Macro economics)	अर्थव्यवस्था को तीन भागों में बांटा गया है पूँजीवादी अर्थव्यवस्था, समाजवादी अर्थव्यवस्था और मिश्रित अर्थव्यवस्था।
	अर्थव्यवस्था किसी देश या क्षेत्र विशेष में अर्थशास्त्र के व्यावहारिक स्वरूप को प्रदर्शित करती है जैसे भारतीय अर्थव्यवस्था चीनी अर्थव्यवस्था एवं अमेरिकी अर्थव्यवस्था इत्यादि ।

अर्थशास्त्र की शाखाएँ (Branches of economic)

- अर्थशास्त्र की दो शाखाएँ हैं, जो निम्नलिखित हैं -

(i) व्यष्टि अर्थशास्त्र (Micro economics)
(ii) समष्टि अर्थशास्त्र (Macro economics)

व्यष्टि अर्थशास्त्र (MICRO ECONOMICS)

- व्यष्टि अर्थशास्त्र को ' सूक्ष्म अर्थशास्त्र ' भी कहा जाता है ।
- व्यष्टि अर्थशास्त्र के अंतर्गत अर्थव्यवस्था की एक इकाई या इकाई के भाग के रूप में अर्थव्यवस्था के छोटे - छोटे पहलुओं अर्थात् व्यक्तिगत आर्थिक इकाइयों का अध्ययन किया जाता है जैसे- एक उपभोक्ता एक उत्पादक एक फर्म अथवा एक उद्योग एक बाजार इत्यादि ।
- अर्थव्यवस्था की सूक्ष्म जानकारी किसी व्यक्ति फर्म घरेलू कार्य की नीति निर्धारण , यथा उत्पादन उपभोग मूल्य निर्धारण इत्यादि में सहायक होती है ।
- व्यष्टि अर्थशास्त्र का अध्ययन आशिक संतुलन से अधिक प्रभावित है जो आर्थिक क्रिया से संबंधित महत्त्वपूर्ण कारकों से प्रभावित होता है ।
- व्यष्टि अर्थशास्त्र के अंतर्गत अनुकूलतम साधन आवंटन और आर्थिक क्रियाओं जैसे- माग और पूर्ति का अध्ययन मूल्य निर्धारण से संबंधित समस्याओं और नीतियों का अध्ययन होता है ।

व्यष्टि अर्थशास्त्र के महत्त्वपूर्ण घटक

उपभोक्ता व्यवहार सिद्धात- इसके अंतर्गत यह अध्ययन किया जाता है कि किस प्रकार एक उपभोक्ता अपनी आय को विभिन्न प्रयोगों में आवंटित करता है ताकि वह अधिकतम संतुष्टि प्राप्त कर सके ।

उत्पादक व्यवहार सिद्धात- इसमें यह अध्ययन किया जाता है कि उत्पादक यह निर्णय कैसे लेता है कि उस किस वस्तु का उत्पादन करना है तथा कितना उत्पादन करना है जिससे उसका लाभ अधिकतम हो सके ।

कीमत सिद्धांत – ''कीमत सिद्धांत'' व्यष्टि अर्थशास्त्र का सबसे महत्त्वपूर्ण घटक है । कीमत सिद्धांत में यह अध्ययन किया जाता है कि बाजार में वस्तुओं की कीमत किस प्रकार निर्धारित होती है ।

समष्टि अर्थशास्त्र (MACRO ECONOMICS)

- समष्टि अर्थशास्त्र को वृहद् अर्थशास्त्र भी कहा जाता है ।
- समष्टि अर्थशास्त्र के अंतर्गत अर्थव्यवस्था के बड़े पहलुओं अर्थात् संपूर्ण अर्थव्यवस्था अथवा संपूर्ण अर्थव्यवस्था के समुच्चयों से संबंधित अध्ययन किया जाता है जैसे राष्ट्रीय आय, राजकोषीय नीति, मौद्रिक नीति, सरकारी बजट, आर्थिक संवृद्धि आर्थिक विकास,

मुद्रास्फीति, गरीबी, बेरोजगारी इत्यादि समष्टि अर्थशास्त्र सभी आर्थिक इकाइयों का समग्र अध्ययन एवं विश्लेषण करता है जिससे आर्थिक प्रणाली का विश्लेषण एवं बड़े पैमाने पर आर्थिक समस्याओं का समाधान किया जा सके ।

- समष्टि अर्थशास्त्र आय रोजगार और संवृद्धि संबंधी नीतियों के व्यापक स्तर से संबंधित होता है।
- समष्टि अर्थशास्त्र का विश्लेषण संपूर्ण अर्थव्यवस्था में आय निर्धारण पर केंद्रित रहता है ।

समष्टि अर्थशास्त्र के महत्त्वपूर्ण घटक

- राजकोषीय नीतियाँ एवं मौद्रिक नीतियाँ
- सरकारी बजट
- मुद्रा की पूर्ति एवं साख सृजन
- अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति एवं अवस्फीतिक
- अंतराल से संबंधित सिद्धांत
- विनिमय दर एवं भुगतान संतुलन
- रोजगार से संबंधित सिद्धांत
- समग्र मांग एवं समग्र आपूर्ति अर्थात् संतुलित उत्पादन से संबंधित सिद्धांत

अर्थव्यवस्था के प्रकारः-

A. पूँजीवादी अर्थव्यवस्था (Capitalist Economy):-

- जिस अर्थव्यवस्था में उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व पाया जाता है तथा वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन निजी लाभ के लिए किया जाता है उसे पूँजीवादी अर्थव्यवस्था कहते हैं।
- अर्थात् यहाँ आर्थिक गतिविधियों पर सरकार का न्यूनतम नियंत्रण होता है तथा निजी क्षेत्र अधिक प्रभावकारी एवं स्वतंत्र होता है।
- एडम स्मिथ की 'दा वेल्थ ऑफ़ नेशन' पूँजीवाद को दार्शनिक आधार प्रदान करता है।
- अमेरिका समेत पश्चिमी यूरोपीय देश पूँजीवाद के समर्थक हैं।

पूँजीवाद के फायदे या गुणः-

- पूँजीवाद नवाचार को बढ़ावा देता है।
- पूँजीवाद और समाज दोनों स्वतंत्रता और अवसर पर केंद्रित हैं।
- पूँजीवाद आबादी की जरूरतों को पूरा करता है।
- पूँजीवाद स्व-नियामक है।
- पूँजीवाद समग्र रूप से समाजों की मदद करता है।

पूँजीवाद के नुकसान या दोषः-

- धन और आय के वितरण की असमानता
- पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में अपरिहार्य के रूप में कक्षा संघर्ष
- सामाजिक लागत बहुत अधिक है
- पूँजी अर्थव्यवस्था की अस्थिरता
- बेरोजगारी और रोजगार के तहत
- वर्किंग क्लास में पर्याप्त सामाजिक सुरक्षा नहीं है

B. समाजवाद अर्थव्यवस्था

- उत्पादन एवं वितरण के सामूहिक नियंत्रण पर बल देता है।
- राज्य द्वारा विनियमित निजी क्षेत्र की भूमिका से लोक कल्याण के उद्देश्य की प्राप्ति।
- भारत,बांग्लादेश,ब्राजील,समेत विकासशील अधिकांश देश समाजवाद के समर्थक हैं।
- बौद्ध और जैन धर्म का अस्तेय आवश्यकता से अधिक संसाधनों के एकत्रीकरण का विरोध करता है, जो समाजवाद की अवधारणा के अनुकूल है।
- अशोक के शिलालेखो से लोक कल्याणकारी राज्य के संदर्भ में जानकारी प्राप्त होती है, वहीं रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख सुदर्शन झील के निर्माण के संदर्भ में प्रमाण देता है।
- इसी प्रकार मध्यकाल में फिरोजशाह तुगलक द्वारा नहरों का निर्माण, बेरोजगारों के लिए पेंशन जैसी समाजवादी योजनाओं की जानकारी प्राप्त होती है।

समाजवाद के पक्ष में तर्क या गुणः-

शोषण का अन्तः-

अभ्यास प्रश्न

1.व्यष्टि अर्थशास्त्र का अर्थ है।
(A) विशिष्ट आर्थिक इकाइयों का अध्ययन।
(B) संपूर्ण अर्थव्यवस्था का अध्ययन
(C) कुल राष्ट्रीय आय का अध्ययन
(D) इनमें से कोई नहीं। **(A)**

2. निम्नलिखित में से किस अर्थव्यवस्था में सामाजिक हित एवं कल्याण को महत्व दिया जाता है?
(A) पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में
(B) समाजवादी अर्थव्यवस्था में
(C) मिश्रित अर्थव्यवस्था में
(D) अविकसित अर्थव्यवस्था में **(B)**

3. अर्थशास्त्र के जनक कौन थे?
(A) एडम स्मिथ
(B) जॉन रॉबिंसन
(C) अरस्तु
(D) प्लेटो **(A)**

4. अर्थव्यवस्था के प्राथमिक क्षेत्र (Primary Sector of Indian Economy) में किसे शामिल नहीं किया जाता है ?
(A) पशुपालन
(B) होटल
(C) खनन एवं उत्खनन
(D) वन एवं वानिकी **(B)**

5. बंद अर्थवयवस्था (Closed economy) वह अर्थवयवस्था है जिसमे -
(A) मुद्रास्फीति पूर्णतया नियंत्रित होती है
(B) घाटे की वित्त वयवस्था होती है
(C) केवल निर्यात होता है
(D) न तो निर्यात होता है , न आयत होता है
(D)

6. निम्नलिखित में से असुमेलित की पहचान करे

पुस्तक	लेखक
(A) दास कैपिटल	कार्ल मार्क्स
(B) फ्री ट्रेड टुडे	पी. एन. भगवती
(C) प्लानिंग एण्ड द पुअर	बी. एस. मिन्हास
(D) एशियन ड्रामा	गुनार मिर्डाल

(B)

7.अल्पविकसित अर्थव्यवस्था की सामान्यतया विशेषता होती है-
(I) प्रति व्यक्ति निम्न आय
(II) पूँजी निर्माण की निम्न दर
(III) निम्न आश्रितता अनुपात
(IV) तृतीयक क्षेत्र में अधिक कार्यबल शक्ति का होना
नीचे दिए गए कूटों से सही उत्तर चुनिए
कूटः
(A) I तथा II

(B) II तथा III
(C) III तथा IV
(D) I तथा IV **(A)**

8. मिश्रित अर्थव्यवस्था का अर्थ है -
(A) वृहत् एवं कुटीर उद्योगों का सहअस्तित्व
(B) औद्योगिक विकास में विदेशों का सहयोग
(C) सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्र का सहअस्तित्व
(D) उपरोक्त में से कोई नहीं **(C)**

9. वर्तमान में भारत अर्थव्यवस्था के मामले में विश्व में कौन-से स्थान पर है?
(A) 3
(B) 4
(C) 5
(D) 7 **(C)**

10. अर्थशास्त्र किसकी पुस्तक है?
(A) एडम स्मिथ
(B) कौटिल्य
(C) मैगनस्थीज
(D) इसमें से कोई नहीं **(D)**

अध्याय- 2

बजट एवं बजट निर्माण

बजट

- बजट किसी भी शासन के अनुमानित आय-व्यय के लेखे को कहा जाता हैं।
- लोक प्रशासन का सबसे महत्वपूर्ण तत्व हैं, वित्तीय व्यवस्था। शासन द्वारा किये जाने वाले सभी कार्यों के लिए धन की आवश्यकता होती हैं। यह धन कहाँ से आयेगा? और यह धन कहाँ-कहाँ खर्च होगा? यह सभी बातें सुविचारित तथा सुव्यवस्थित होनी चाहिए। इसी व्यवस्था को बजट के नाम से जाना जाता हैं।

बजट का अर्थ

- स्पष्ट हैं कि शासन के अनुमानित आय-व्यय के लेखे को बजट कहा जाता हैं। यह लेखा एक वर्ष का हो सकता हैं या उससे अधिक वर्ष का भी हो सकता हैं। इस लेखे में वर्ष में विभिन्न मदों पर होने वाले व्यय का वर्णन रहता हैं, साथ ही इस बात का स्पष्ट उल्लेख भी रहता हैं कि उसके लिए जरूरी धन कहाँ से आयेगा? नये करों का प्रावधान भी उसमें रहता हैं।

एक अच्छे बजट के मुख्य लक्षण या विशेषताएं

1 बजट एक निश्चित अवधि के लिए आय-व्यय का अनुमान हैं।

2 यह एक तुलनात्मक तालिका भी हैं, जिसमे प्राप्तियों व खर्चों की राशियों की तुलनात्मक विवेचना होती हैं।

3 यह सरकार के लिये धन उगाही और व्यय के लिये विधायिका का आदेश हैं।

4 यह प्रशासन के कार्यों का वित्तीय प्रतिवेदन हैं।

बजट के प्रकार (Types Of Budget)

(1) निर्माण के आधार पर (On the Basis of Construction):

i व्यवस्थापिका द्वारा निर्मित बजट ।

ii कार्यपालिका द्वारा निर्मित बजट (भारत में यही प्रचलित हैं) ।

iii मण्डल या आयोग द्वारा निर्मित बजट (अमेरिका के कुछ राज्यों में प्रचलित हैं) ।

(2) स्वरूप के आधार पर (On the Basis of Format):

(A) लाइन आइटम बजट (Line-Item Budget):

यह बजट का परम्परागत रूप हैं । यह 18वीं-19वीं सदी में विकसित हुआ । इस बजट में वस्तुओं या मद का महत्व अधिक होता हैं । उन मदों या वस्तुओं पर खर्च से क्या उद्देश्य हासिल होगा, इस पर नहीं । इसका मुख्य उद्देश्य अपव्यय, अधिक खर्च और बर्बादी को रोकना हैं ।

iलाइन-आइटम बजटिंग में सार्वजनिक व्यय पर कठोर नियन्त्रण रखने के उद्देश्य को प्रमुखता दी जाती हैं । इसमें बजट को सार्वजनिक खर्च पर नियन्त्रण रखने की विधि के रूप में देखा जाता हैं जिसका परिणाम वस्तुनिष्ठ बजट के रूप में सामने आता हैं ।

iiइसमें व्यय की प्रत्येक मद को पंक्तिवार (लाइन) लिखा जाता हैं ।

iii इसमें यह देखा जाता हैं कि जिस मद पर खर्च की स्वीकृति हुई हैं, वह उसी पर व्यय हो, यद्यपि लाइन आइटम बजट को इस वस्तुनिष्ठता के बजाय एक दूसरे रूप में भी बनाया जाता हैं । जिसमें एक मद का पैसा दूसरे मद में भी खर्च करने की अनुमति रहती हैं।

ivइसमें खर्च की जाने वाली राशि पर जोर अधिक रहता हैं, उससे क्या परिणाम हासिल हुआ, उस पर नहीं ।

v इसे अभिवर्धन बजट व्यवस्था भी कहते हैं क्योंकि बजट राशि सदैव पूर्व की अपेक्षा अधिक दी जाती हैं । वैसे यही बजट अन्य सुधारात्मक बजट जैसे शून्य बजट आदि का आधार होता हैं।

1. वित्तीय स्रोतों का एकत्रीकरण
2. वित्तीय संसाधनों का संरक्षण
3. वित्तीय संसाधनों का वितरण
4. सरकारी आय व्यय का लेखा
5. लेखांकन

पाँचवां चरण (Fifth Stage)

- बजट निर्माण का अंतिम चरण लेखा परीक्षण चरण कहलाता है । इस चरण में सामान्यतया सभी सरकारी विभागों द्वारा प्रतिमाह के हिसाब महालेखाकार के कार्यालय प्रेषित किए जाते हैं , यहाँ पर इन्हें - आय - व्यय के लिए निर्धारित विभिन्न शीर्षकों के अधीन वर्गीकृत किया जाता है और फिर इन लेखों का नियमित रूप से लेखाधिकारियों द्वारा अंकेक्षण किया जाता है ।
- अंकेक्षण के बाद महालेखा परीक्षक द्वारा इन लेखों का वार्षिक संकलन चर शीर्षकों जैसे-

1. राजस्व खाता
2. पूँजीगत खाता
3. ऋण खाता

4 दूरस्थ प्राप्तियों में किया जाता है ,
जो बजट बज सत्र के समय संसद के समक्ष प्रस्तुत किए जाते हैं और इस प्रकार बजट का अन्तिम चरण पूर्ण होकर बजट संबंधी प्रक्रिया पूर्ण हो जाती है ।

वित्त घाटे के प्रकार (Types of Financial Deficit)

बजटीय घाटा-

- जब कुल प्राप्तियों की मात्रा से कुल व्यय की मात्रा अधिक होती है , तो उसे बजटीय घाटा कहते हैं ।

बजटीय घाटा = कुल प्राप्ति - कुल व्यय

राजस्व घाटा-

- जब प्राप्ति राजस्व प्राप्ति राजस्व व्यय से कम हो , तो उसे राजस्व घाटा कहते हैं ।

राजस्व घाटा = कुल राजस्व प्राप्ति - कुल राजस्व व्यय

राजकोषीय घाटा (Fiscal Deficit)

- जब सरकारी अपनी राजस्व प्राप्तियों से अधिक व्यय करती है , तो उसे राजकोषीय घाटा कहते हैं ।

राजकोषीय घाटा = राजस्व घाटा + पूँजीगत व्यय

प्राथमिक घाटा

- जब राजकोषीय घाटे में से ब्याज अदायगी को घटा या निकाल देते हैं , तो उसे प्राथमिक घाटा कहते हैं ।

प्राथमिक घाटा = सकल राजकोषीय घाटा - ब्याज दायित्व

मौद्रीकृत घाटा

- जब घाटे की वित्तीय व्यवस्था को नोट निर्गमन के द्वारा पूरा किया जाता है , तो उसे मौद्रीकरण कहते हैं और उसे घाटे को मौद्रिक घाटा कहते हैं ।

मौद्रिक घाटा = बजटरी घाटा + सार्वजनिक बजट में RBI का योगदान

क्रियात्मक घाटा

- स्फीति समायोजित राजकोषीय घाटे की क्रियात्मक घाटा कहते हैं ।

क्रियात्मक घाटा = सकल राजकोषीय घाटा- स्फीतिक समायोजन

बजट से संबंधित वैधानिक कोष

भारत की संचित निधि (अनुच्छेद- 266)

- इस कोष की सारी प्राप्तियों को जमा एवं सारे भुगतान को व्यय में डाला जाता है ।
- सरकार की ओर से किए जाने वाले सभी भुगतान वैधानिक रूप से इसी कोष से किए जाते हैं । इस कोष से किसी भी राशि का विनियोग (जारी करना या निकालना) संसदीय कानून के अनुसार ही किया जाता है ।

भारत का सार्वजनिक लेखा (अनुच्छेद- 266 (2))

- भारत सरकार द्वारा या इसकी ओर से प्राप्त तमाम अन्य सार्वजनिक राशियों (उनके अलावा जो भारत की संचित निधि में जमा की जाती है) भारतीय सार्वजनिक लेखा में जमा की जाएगी ।

बजट 2022-23

केंद्रीय बजट 2022-23- वित्तीय प्रबंधन

- बजट अनुमान 2021-22:- 83 लाख करोड़ रुपए
- संशोधित अनुमान 2021-22:- 70 लाख करोड़ रुपए
- वर्ष 2022-23 में कुल व्यय:- 45 लाख करोड़ रुपए
- वर्ष 2022-23 में उधार के अतिरिक्त कुल प्राप्तियां 84 लाख करोड़ रुपये अनुमानित हैं
- चालू वर्ष में राजकोषीय घाटा:- सकल घरेलू उत्पाद का 9% (बजट अनुमान में 6.8% के मुकाबले)
- वर्ष 2022-23 में राजकोषीय घाटा सकल घरेलू उत्पाद का 4% रहने का अनुमान है

आर्थिक वृद्धि:-

- भारत की आर्थिक वृद्धि 2% होने का अनुमान है जो समस्त वृहद अर्थव्यवस्थाओं में सर्वाधिक है।

रोजगार:-

- 14 क्षेत्रों में उत्पादकता सहलग्न प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत 60 लाख नए रोजगार सृजित होंगे।
- पीएलआई योजनाओं में 30 लाख करोड़ रुपये का अतिरिक्त उत्पादन सृजित करने की क्षमता है।

विकास प्राथमिकताएं:-

अमृत काल में प्रवेश करते हुए, भारत @ 100 के लिए 25 वर्ष की लंबी पहुंच, बजट चार प्राथमिकताओं के साथ विकास को गति प्रदान करता है-

- ✓ पीएम गति शक्ति
- ✓ समावेशी विकास
- ✓ उत्पादकता वृद्धि एवं निवेश, नवोदित एवं विकासशील अवसर, ऊर्जा संक्रमण तथा जलवायु कार्रवाई।
- ✓ निवेश का वित्तपोषण

केंद्रीय बजट 2022-23: प्रधानमंत्री गति शक्ति

- पीएम गति शक्ति को संचालित करने वाले सात इंजन निम्नलिखित हैं-

- ✓ सड़कें,
- ✓ रेलवे,
- ✓ हवाई अड्डे,
- ✓ बंदरगाह,

अध्याय - 3
बैंकिंग

- बैंक उस वित्तीय संस्था को कहते हैं जो जनता की धनराशि जमा करने तथा जनता को ऋण देने का काम करती है।
- लोग अपनी बचत राशि को सुरक्षा की दृष्टि से अथवा ब्याज कमाने हेतु इन संस्थाओं में जमा करते हैं और आवश्यकता अनुसार समय-समय पर निकालते रहते हैं।
- बैंक इस प्रकार जमा से प्राप्त राशि को व्यापारियों एवं व्यवसायियों को ऋण देकर ब्याज कमाते हैं।

भारत में बैंकिंग

- भारत में स्थापित पहली बैंक Bank of Hindustan थी इसकी स्थापना Alexandey and Company 1770ई. में की थी कुछ समय बाद यह बैंक बन्द हो गई।
- इसके बाद देश में निजी और सरकारी अंशधारियों द्वारा तीन प्रेसीडेन्सी बैंकों की स्थापना की गई - वर्ष 1806 में बैंक ऑफ बंगाल (Bank of Bengal.) , वर्ष 1840 में बैंक ऑफ बॉम्बे (Bank of Bombay) तथा वर्ष 1843 में बैंक ऑफ मद्रास (Bank of Madras) ।
- इन तीनों बैंकों पर बैंक ऑफ मद्रास अपना नियंत्रण रखती थी । बाद में इन बैंकों के कार्यों को सीमित कर दिया गया । वर्ष 1921 में इन तीनों बैंकों को मिलाकर इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया (Impe rial Bank of India) की स्थापना की गई और । जुलाई, 1955 को राष्ट्रीयकरण के उपरान्त इसका नाम बदलकर स्टेट बैंक ऑफ इंडिया रख दिया गया ।
- भारत में पहली सीमित देयता वाला भारतीय बैंक अवध कमर्शियल बैंक था जिसकी स्थापना फैजाबाद में वर्ष 1881 में की गयी थी ।
- उसके बाद वर्ष 1894 में लाहौर में पंजाब नेशनल बैंक की स्थापना हुई जो पहला पूर्ण रूप से प्रथम भारतीय बैंक था ।

भारत में स्थापित प्रमुख बैंक व उनकी स्थापना

बैंक का नाम	स्थापना वर्ष
द बैंक ऑफ हिन्दुस्तान	1770
बैंक ऑफ बंगाल	1806
बैंक ऑफ बॉम्बे	1840
बैंक ऑफ मुद्रास	1843
इलाहाबाद बैंक	1865
एलाइन्स बैंक ऑफ शिमला	1881
अवध कॉमर्शियल बैंक	1881
पंजाब नेशन बैंक	1894
बैंक ऑफ इंडिया	1906
पंजाब एंड सिंध बैंक	1908
बैंक ऑफ बडौदा	1909
सेण्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया	1911
बैंक ऑफ मैसूर	1913
इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया	1921
भारतीय रिजर्व बैंक	1935
भारतीय स्टेट बैंक	1955

भारतीय रिजर्व बैंक

- भारत का केन्द्रीय बैंक है ।
- वर्ष 1930 में केन्द्रीय बैंकिंग जाँच समिति की सिफारिश के आधार पर भारत के केन्द्रीय बैंक के रूप में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (R.B.I.) की स्थापना RBI अधिनियम, 1934 के तहत् । अप्रैल , 1935 को 5 करोड़ रुपये की अधिकृत पूँजी से हुई थी ।

1. इण्डिया सिक्योरिटी प्रेस , नासिक (महाराष्ट्र) –

- भारत प्रतिभूति में डाक सम्बन्धी लेखन सामग्री , डाक एवं डाक - भिन्न टिकटों , अदालती एवं गैर - अदालती स्टाम्पों , बैंकों (RBI तथा SBI) के चेकों , बॉण्डों , राष्ट्रीय बचत पत्रों आदि के अलावा राज्य सरकारों , सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों , वित्तीय निगमों आदि के प्रतिभूति पत्रों की छपाई की जाती है ।

2. सिक्योरिटी प्रिन्टिंग प्रेस , हैदराबाद

- सिक्योरिटी प्रिन्टिंग प्रेस हैदराबाद की स्थापना दक्षिण राज्यों की डाक लेखन सामग्री की मांगों को पूरा करने के लिए की गई तथा यहाँ पूरे देश की केन्द्रीय उत्पाद शुल्क स्टाम्प की छपाई भी होती है ।

3. करेन्सी नोट प्रेस , नासिक (महाराष्ट)

- नोट प्रेस 1 , 2 , 5 , 10 , 50 , 100 , 500 तथा 2000 रुपये के बैंक नोट छापती है और उनकी पूर्ति करती है ।

4. बैंक नोट प्रेस , देवास (मध्य प्रदेश)

- देवास स्थित बैंक नोट प्रेस 20 , 50 , 100 , 500 और 2000 रुपये के उच्च मूल्य वर्ग के नोट छापती है ।
- बैंक नोट प्रेस का स्याही का कारखाना प्रतिभूति पत्रों की स्याही का निर्माण करता है ।

5 . साल्बोनी (पं . बंगाल) तथा मैसूर (कर्नाटक) के भारतीय रिजर्व बैंक ने दो नयी एवं अत्याधुनिक करेन्सी नोट प्रेस स्थापित की गयी है । यहाँ भारतीय रिजर्व बैंक के नियन्त्रण में करेन्सी नोट छापे जाते हैं ।

6. सिक्योरिटी पेपर मिल , होशंगाबाद (मध्य प्रदेश)

बैंक और करेन्सी नोट कागज तथा गैर - ज्यूडिशियल स्टाम्प पेपर की छपाई में प्रयोग होने वाले कागज का उत्पादन करने के लिए सिक्योरिटी पेपर मिल होशंगाबाद में 1967-68 में चालू की गई थी ।

सरकार के बैंकर का कार्य करना

- सरकारी बैंकर के रूप में यह निम्नलिखित कार्य सम्पन्न करता है-

(i) भारत सरकार तथा राज्य सरकारों की ओर से धन प्राप्त करना और इनके आदेशानुसार इनका भुगतान करना ।

(ii) भारत सरकार तथा राज्य सरकारों की ओर से जनता से ऋण प्राप्त करना ।

(iii) सरकारी कोषों का स्थानान्तरण करना ।

(iv) भारत सरकार एवं राज्य सरकारों के लिए विदेशी विनिमय का प्रबन्ध करना ।

(v) भारत सरकार एवं राज्य सरकारों को आर्थिक सलाह देना ।

रिजर्व बैंक बैंकों का बैंक

- बैंकों के बैंक के रूप में यह निम्नलिखित कार्य करता है

(i) रिजर्व बैंक व्यापरिक बैंकों का अंतिम ऋणदाता है ।

(ii) रिजर्व बैंक बैंकों की साख नीति का नियंत्रण रखता है ।

(iii) वर्ष 1949 के बैंकिंग नियमन अधिनियम के अंतर्गत रिजर्व बैंक को व्यापक अधिकार प्राप्त है ; जैसे - अनुसूचित बैंक का निरीक्षण करना , नए बैंकों की स्थापना के लिए अनुज्ञा - पत्र प्रदान करना , आदि ।

विदेशी विनिमय कोष का संरक्षण करना

- केन्द्रीय बैंक देश के विदेशी विनिमय कोष के संरक्षक के रूप में भी कार्य करता है । केन्द्रीय बैंक विदेशी मुद्राओं के कोष संचित रखता है जिससे अंतरराष्ट्रीय व्यापार के विकास तथा विनिमय दर की स्थिरता को बनाए रखा जा सके ।

कृषि साख की व्यवस्था करना

- कृषि साख की व्यवस्था करने के लिए रिजर्व बैंक ने एक कृषि साख विभाग की स्थापना की है । इस विभाग का मुख्य कार्य कृषि साख से सम्बन्धित समस्याओं के बारे में अनुसंधान करना है ।

	बैंक किसी भी तरह का ऋण नहीं दे सकते हैं। यह वर्ष 2010 में पूर्व प्रचलित प्राइम लैंडिंग रेट नोट (PLR) के स्थान पर अपनाया गया है
नकद आरक्षण अनुपात (Cash Reserve Ratio)	• प्रत्येक व्यापारिक बैंक अपनी कुछ जमाओं का एक निर्धारित प्रतिशत रिजर्व बैंक के पास सदैव नकद रूप में रखता है जिसे नकद आरक्षण अनुपात (CRR) कहते हैं। • रिजर्व बैंक इस नकद पर कोई ब्याज बैंक को नहीं देता है। जब रिजर्व बैंक साख मुद्रा वृद्धि करना चाहता है, तो वह इस अनुपात में कमी कर देता है। और यदि वह साख मुद्रा में कमी करना चाहता है, तो वह इस अनुपात में वृद्धि कर देता है।
वैधानिक तरलता अनुपात (Statutory Liquidity Ratio)	• प्रत्येक बैंक को कुल जमाराशि के एक निश्चित प्रतिशत को अपने पास नकद रूप में या अन्य तरल परिसम्पत्तियों के रूप में (सोना अनुमोदित प्रतिभूतियाँ- सरकारी प्रतिभूतियाँ) रखना पड़ता है जिसे वैधानिक तरलता (SLR) कहा जाता है। • यदि रिजर्व बैंक को साख मुद्रा का प्रसार करना होता है, तो इस अनुपात को कम कर दिया जाता है, ताकि बैंकों के पास तरल कोषों में वृद्धि हो सके। • यदि साख का संकुचन करना होता है, तो इस अनुपात को बढ़ा दिया जाता है, ताकि बैंकों के पास तरल कोष कम उपलब्ध हो।
रेपो दर (Repo Rate)	• रेपो दर वह दर है जिस पर रिजर्व बैंक बैंकों को अल्पकालीन ऋण देकर अर्थव्यवस्था में तरलता की अतिरिक्त मात्रा जारी करता है। • इसका प्रभाव व्यावसायिक बैंकों द्वारा आवंटित ऋणों पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। • इसका प्रयोग तात्कालिक मुद्रा के प्रसार में वृद्धि या कमी के लिए किया जाता है। • मंदी के दौरान रेपो दर में कटौती की जाती है ताकि मुद्रा के प्रसार में वृद्धि हो। ज्यों - ज्यों मंदी का दौर खत्म होता है, रेपो दर से वृद्धि की जाती है ताकि तात्कालिक मुद्रा का प्रसार कम हो।
रिवर्स रेपो दर (Reverse Repo Rate)	• यह रेपो दर से उल्टी होती है। बैंकों के पास दिनभर के कामकाज के बाद बहुत बार एक बड़ी रकम शेष बच जाती है। बैंक वह रकम अपने पास रखने के बजाए रिजर्व बैंक में रख सकते हैं, जिस पर उन्हें रिजर्व बैंक से ब्याज भी मिलता है। जिस दर पर यह ब्याज मिलता उसे रिवर्स रेपो दर कहते हैं।
मार्जिनल स्टैण्डिंग फैसिलिटी (MSF)	• इसके अंतर्गत व्यापारिक बैंक 1 दिन (24 घण्टे) हेतु ऋण प्राप्त कर सकते हैं। • MSF के माध्यम से बैंक अपनी NDTL के 2.5% तक ऋण प्राप्त कर सकते हैं। • इसमें SLR में रखी प्रतिभूतियों को भी गिरवी रख सकते हैं।

अध्याय – 10

राजकोषीय एवं मौद्रिक नीतियाँ

राजकोषीय नीति की परिभाषा

जब किसी देश की सरकार देश की अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं के लिए समग्र मांग और आपूर्ति को प्रभावित करने के लिए अपनी कर राजस्व और व्यय नीतियों को लागू करती है, तो इसे राजकोषीय नीति के रूप में जाना जाता है। यह सरकार द्वारा विभिन्न स्रोतों से खर्च करने और विभिन्न परियोजनाओं पर खर्च करने के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए सरकार द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली रणनीति है। किसी देश की राजकोषीय नीति की घोषणा प्रत्येक वर्ष बजट के माध्यम से वित्त मंत्री द्वारा की जाती है।

यदि राजस्व व्यय से अधिक है, तो इस स्थिति को राजकोषीय अधिशेष के रूप में जाना जाता है, जबकि यदि व्यय राजस्व से अधिक है, तो इसे राजकोषीय घाटे के रूप में जाना जाता है। राजकोषीय नीति का मुख्य उद्देश्य स्थिरता लाना, बेरोजगारी को कम करना और अर्थव्यवस्था का विकास करना है। राजकोषीय नीति में उपयोग किए जाने वाले उपकरण कराधान और इसकी संरचना और विभिन्न परियोजनाओं पर व्यय का स्तर है। राजकोषीय नीति के दो प्रकार हैं, वे हैं:

- **विस्तारवादी राजकोषीय नीति** : वह नीति जिसमें सरकार करों को कम करती है और सार्वजनिक व्यय को बढ़ाती है।
- **संविदात्मक राजकोषीय नीति** : वह नीति जिसमें सरकार कर बढ़ाती है और सार्वजनिक व्यय को कम करती है।

राजकोषीय नीति को निम्न निश्चित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए बनाया गया है: -

1 संसाधनों के सही उपयोग द्वारा विकास करना : राजकोषीय नीति का प्रमुख उद्देश्य तीव्र आर्थिक विकास को प्राप्त करना और उसे बनाये रखना है। आर्थिक वृद्धि के इस उद्देश्य को वित्तीय संसाधनों के सदुपयोग द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। भारत में केंद्र और राज्य सरकारें संसाधन जुटाने के लिए राजकोषीय नीति का इस्तेमाल करते हैं।

वित्तीय संसाधनों को निम्न प्रकार जुटाया जा सकता है: -

a **कराधान:** प्रभावी राजकोषीय नीतियों के माध्यम से सरकार का लक्ष्य प्रत्यक्ष करों के साथ-साथ अप्रत्यक्ष करों द्वारा संसाधनों को जुटाना है भारत में संसाधन जुटाने का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत कराधान है।

b **सार्वजनिक बचत:** सरकारी खर्च में कटौती और सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के अधिशेष में बढोत्तरी के द्वारा इन संसाधनों को सार्वजनिक बचत के माध्यम से जुटाया जा सकता है।

c **निजी बचत:** सरकार निजी क्षेत्रों को बांड जारी करके , ट्रेजरी बिल, व्यक्तिगत ऋण इत्यादि के माध्यम से आम लोगो के पास रखी बचतों को बाजार में लाती है, जिससे अर्थव्यस्था में आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है ।

2 आय और धन की असमानताओं में कटौती: राजकोषीय नीति का उद्देश्य समाज के विभिन्न वर्गों के बीच आय असमानताओं को कम कर बराबरी या सामाजिक न्याय प्राप्त करना है। प्रत्यक्ष करों जैसे आयकर की दर गरीब लोगों की तुलना में अमीर लोगों के लिए अधिक होती है । सेमी लक्जरी और लक्जरी वस्तुएं जिनका उपयोग ज्यादातर उच्च मध्यम वर्ग और मध्यम वर्ग द्वारा किया जाता है, पर अप्रत्यक्ष करों में भी इसी तरह की प्रक्रिया अपनाई जाती है। समाज में गरीब लोगों की स्थिति में सुधार करने के लिए गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में कर राजस्व का एक महत्वपूर्ण अनुपात के रूप में सरकारी निवेश किया है।

(उदाहरण के लिए, कर कटौती या अन्य राहत) मानक बजट चौनलों के माध्यम से प्रदान किए जाते हैं। 'लाइन से नीचे उपायों को आम तौर पर परिसंपत्तियों के निर्माण में शामिल माना जाता है, जैसे कि इक्विटी इंजेक्शन, ऋण, संपत्ति की खरीद आदि, जिसका राजकोषीय घाटे पर बहुत कम या कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता है, लेकिन वे ऋण को बढ़ा सकते हैं या नकदी (आईएमएफ राजकोषीय मॉनिटर अप्रैल 2020) को कम कर सकते हैं।

सितंबर, 2020 तक कोविड़-19 महामारी की प्रतिक्रिया में सरकारों द्वारा घोषित विभिन्न लाइन से ऊपर उपायों और अन्य नकदी/लिक्विडिटी समर्थन उपायों की संरचना, आईएमएफ के इन अनुमानों से पता चलता है कि भारत सरकार ने सकल घरेलू उत्पादन के 2.2 प्रतिशत के बराबर लाइन उपायों की घोषणा की और अन्य तरलता सितंबर 2020 तक जीडीपी के लगभग 5.3 प्रतिशत के उपायों का समर्थन किया ।यह दर्या दिया जा सकता है कि जीडीपी के 1.7 प्रतिशत के बराबर अतिरिक्त राजकोषीय उपायों को भारत सरकार ने अक्टूबर और नवंबर 2020 में पेश किया था (देखें बॉक्स 2)। हालांकि भारत के उपाय अन्य विकसित देशों की तुलना में छोटे थे, लेकिन वे अर्थव्यवस्था में सुधार की सुविधा के लिए पर्याप्त थे । यह भारत को भविष्य में राजकोषीय संसाधनों को तैनात करने के लिए अधिक बड़ा एल्बो रूमछोड़ देता है ।

➢ मौद्रिक नीति की परिभाषा

मौद्रिक नीति केंद्रीय बैंक द्वारा एक अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति को नियंत्रित करने और विनियमित करने के लिए उपयोग की जाने वाली रणनीति है। इसे क्रेडिट पॉलिसी के रूप में भी जाना जाता है। भारत में, भारतीय रिजर्व बैंक अर्थव्यवस्था में धन के प्रसार का कार्य देखता है।

मौद्रिक नीतियां दो तरह की होती हैं, यानी विस्तार और संकुचन। जिस नीति में ब्याज दरों को कम करने के साथ-साथ मुद्रा आपूर्ति बढ़ाई जाती है, उसे विस्तारवादी मौद्रिक नीति के रूप में जाना जाता है। दूसरी ओर, यदि धन की आपूर्ति में कमी और ब्याज दरों में वृद्धि होती है, तो उस नीति को अनुबंधवादी मौद्रिक नीति के रूप में माना जाता है।

मौद्रिक नीति के प्राथमिक उद्देश्यों में मूल्य स्थिरता लाना, मुद्रास्फीति को नियंत्रित करना, बैंकिंग प्रणाली को मजबूत करना, आर्थिक विकास इत्यादि शामिल हैं। मौद्रिक नीति उन सभी मामलों पर ध्यान केंद्रित करती है जिनका धन की संरचना, ऋण के संचलन, ब्याज दर संरचना पर प्रभाव पड़ता है। । अर्थव्यवस्था में ऋण को नियंत्रित करने के लिए शीर्ष बैंक द्वारा अपनाए गए उपायों को मोटे तौर पर दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है:

सामान्य उपाय (मात्रात्मक उपाय):

- बैंक दर
- रिजर्व आवश्यकताएं यानी सीआरआर, एसएलआर इत्यादि।
- रेपो रेट रिवर्स रेपो रेट
- खुला बाजार परिचालन
- चयनात्मक उपाय (गुणात्मक उपाय):
- क्रेडिट विनियमन
- नैतिक अनुमय
- प्रत्यक्ष कार्रवाई
- निर्देश जारी करना

अध्याय – I

प्रमुख स्थालाकृतियाँ

- **पर्वत (Mountains)**

- स्थल का वह भू -भाग जो अपने आस-पास के क्षेत्र से कम से कम 600 मीटर से अधिक ऊंचा हो और जिसका शीर्ष चोटीनुमा तथा पृष्ठ तीव्र ढाल युक्त हो, पर्वत (Mountain) कहलाता है।
- ऐसा उच्च प्रदेश जिसमें विभिन्न काल विभिन्न रीतियों से बनी पर्वतमालाएँ विद्यमान हो, पर्वत-समूह (Cordillera) कहलाता है, जैसे -ब्रिटिश कोलम्बिया का कॉर्डिलेरा।
- जब एक ही प्रकार और एक ही आयु के कई पर्वत लंबी एवं शंकरी पट्टी में फैले होते हैं, तो उसे पर्वत-श्रेणी (Mountain Range) कहा जाता है, जैसे - हिमालय पर्वत- श्रेणी।
- एक ही काल और एक ही प्रकार से बनी अनेक पर्वत- श्रेणियों के समूह को पर्वत - तंत्र (Mountain System) कहते हैं, जैसे - अप्लेशियन पर्वत।

- **उत्पत्ति के आधार पर पर्वत पांच प्रकार के होते हैं,**

1. **वलित पर्वत** (Folded Mountains) पृथ्वी की आंतरिक शक्तियों द्वारा धरातलीय चट्टानों में मोड़ या वलन पड़ने के परिणाम स्वरूप बने हुए पर्वतों को मोड़कर अथवा वलित पर्वत कहा जाता है, जैसे - हिमालय, रॉकीज, आलप्स, यूराल, एण्डीज आदि।

2. **ब्लॉक अथवा भ्रंशोत्थ पर्वत** (Block Mountains)
जब चट्टानों में स्थित भ्रंश के कारण मध्य भाग नीचे की ओर धँस जाता है, तथा अगल-बगल के भाग ऊंचे प्रतीत होते हैं तो वह ब्लॉक पर्वत कहलाते हैं, और बीच के धँसे भाग को रिफ्ट घाटी कहते हैं, जैसे सियरा, नेवादा पर्वत, अल्बर्ट, वासाचरेंज, बार्नर, ब्लैक फॉरेस्ट, वासगेज, साल्ट रेंज आदि।

3. **संग्रहित पर्वत** (Accumulated Mountains) किसी भी साधन द्वारा धरातल पर मिट्टी, कंकड़, पत्थर, बालू आदि का धीरे-धीरे जमाव होने से कालांतर में निर्मित बड़ी पर्वताकार स्थलाकृति को संग्रहित पर्वत कहा जाता है। ऐसे पर्वतों का सर्वप्रमुख रूप से तो ज्वालामुखी उद्गार के समय बनने वाले लावा तथा अन्य जमावों वाले पर्वत ही हैं इन पर्वतों का निर्माण ज्वालामुखीय उद्गार से उत्पन्न पदार्थों से होता है । अतः इन्हें ज्वालामुखी पर्वत भी कहते हैं ;- जैसे शस्ता, रेनियर, हुड, लासेन, पीक, फ्यूजीयामा विसुवियस, एटना, केनिया, पोपोकेटीपल माउंट एकांकागुआ आदि।

4. गुंबदाकार पर्वत (Dome-shaped Mountains) जब पृथ्वी के भीतर का लावा बाहर निकलने की चेष्टा करता है, तो वह धरातल की परतों में फोड़े की तरह उभार पैदा कर देता है, जिससे गुंबदाकार पर्वत बन जाते हैं ;- जैसे हेनरी पर्वत, ब्लैक हिल्स, बिगहान्स आदि।

5. **अवशिष्ट पर्वत** (Erosion or Relict Mountains) यह पर्वत चट्टानों के अपरदन के फलस्वरूप निर्मित होते हैं ; जैसे - अरावली, सतपुड़ा, महादेव, अप्लेशियन ऑजार्क, गैसिफ, कैटस्किल, पारसनाथ, विंध्यांचल, पश्चिमी घाट।

विश्व के प्रमुख पर्वत – शिखर

क्र.स.	नाम	देश	ऊंचाई (मीटर में)
1.	एवरेस्ट	नेपाल	8,848
2.	के2(गॉडविन ऑस्टिन)	भारत	8,611
3.	कंचनजंगा	नेपाल - भारत	8,598

4.	लहात्से	नेपाल	8,501
5.	मकालू	नेपाल-चीन	8,475
6.	धौलागिरी	नेपाल	8,172
7.	नंगा पर्वत	भारत	8,126
8.	अन्नपूर्णा	नेपाल	8,078
9.	ग्रेशरब्रम	भारत(पाक अधिकृत)	8,068
10	गोसांई थान	चीन	8,018
11.	नंदादेवी	भारत	7,817
12.	राकापोशी	भारत(पाक अधिकृत)	7,788
13.	कामेट	भारत-चीन	7,756
14.	नाम्चावर्वा	चीन	7,756
15.	गुर्लमान्धाता	चीन	7,728
16.	तिरिचमीर	पाकिस्तान	7,728

क्र.सं.	पर्वत	स्थिति
A. वलित पर्वत Folded Mountains		
1.	हिमालय	एशिया
2.	आल्पस	यूरोप
3.	रॉकी	उत्तरी अमेरिका
4.	एण्डीज	दक्षिणी अमेरिका
5.	यूराल	एशिया-यूरोप
6.	एप्लेशियन	उत्तरी अमेरिका
7.	त्यानशान	एशिया (रूस)
8.	नॉन-शान	एशिया (चीन)
9.	सयान	रूस (एशिया)
10.	स्टेनोबाई	रूस (एशिया)
11.	अरावली	भारत (एशिया)
12.	विंध्याचल	भारत (एशिया)
B. ब्लॉक पर्वत Block Mountains		
1.	सियरा नेवादा	उत्तरी अमेरिका
2.	एल्बर्ट	उत्तरी अमेरिका
3.	वासाच रेंज	उत्तरी अमेरिका
4.	बार्नर	उत्तरी अमेरिका
5.	ब्लैक फारेस्ट	जर्मनी (यूरोप)
16.	वासगेज	फ्रांस (यूरोप)
7.	साल्ट रेंज	पाकिस्तान (एशिया)
C. गुम्बदाकार पर्वत Dome Shaped Mountains		
1.	हेनरी पर्वत	संयुक्त राज्य अमेरिका
D. संगृहीत पर्वत Accumulated Mountains		
1.	शस्ता	संयुक्त राज्य अमेरिका
2.	रेनियर	संयुक्त राज्य अमेरिका
3.	हुड	संयुक्त राज्य अमेरिका
4.	लासेन पीक	संयुक्त राज्य अमेरिका
5.	फ्यूजीयामा	जापान
6.	विसूवियस	इटली
7.	एटना	इटली
8.	मैथान	फिलीपींस

18.	जैग्रोस पर्वत श्रेणी	ईरान	जार्ड कुह	4,547	1,530
19.	स्कैण्डीनेबियन रेंज	पश्चिमी नॉर्वे	गैलढोपिजेन	2,470	1,530
20.	एथियोपियन उच्चभूमि	इथियोपिया	रास डासन	4,600	1,450
21.	पश्चिमी सियरा माद्रे	मैक्सिको	नेबाडो डिकोलिमा	4,265	1,450
22.	मलागासी श्रेणी	मेडागास्कर द्वीप	मारोमोकोट्रो	2,876	1,370
23.	डेकेन्सबर्ग	दक्षिण-पूर्व अफ्रीका	दबाजाएन्टलेन्याजा	3,482	1,290
24.	चेर्सकोगो खेबेट	पूर्वी रूस	गोरा पोबेडा	3,147	1,290
25.	काकेशस	जॉर्जिया	एलब्रुश (पश्चिमी चोटी)	5,633	1,200
26.	अलास्का श्रेणी	अलास्का - संयुक्त राज्य अमेरिका	माउण्ट मैकिन्ले (द्र०)	6,193	1,130
27.	असम-म्यांमार श्रेणी	असम प० म्यांमार	हकाकाबो राजी	5,881	1,130
28.	कास्केड रेंज	उ०प० सं०रा० अमेरिका-कनाडा	माउण्ट रेनियर	4,392	1,130

अध्याय – 2

प्रमुख नदियाँ एवं झीलें

नदियाँ -

- जिस स्थान पर नदी जन्म लेती है, उसे नदी का उद्गम स्थान कहा जाता है।
- जिस स्थान पर नदी सागर या किसी बड़ी झील में जाकर गिरती है, उसे नदी का मुख या मुहाना कहते हैं।
- जिस मार्ग से नदी की धारा गुजरती है, उसे नदी घाटी कहा जाता है।
- नदी घाटी के विकास में जब सहायक नदियाँ मुख्य नदी से आकर मिलती है तो अपवाह बेसिन (Drainage System) का निर्माण होता है।
- दो अपवाह बेसिनों के बीच के उच्च भाग को जल विभाजक (Watershed or Water Divider) कहते हैं।
- भारत की पश्चिमी घाट की पर्वत श्रेणी जल-विभाजक का काम करती है।
  - क्योंकि इसके पूर्व में बहने वाली नदियाँ बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं, जबकि पश्चिम में बहने वाली नदियाँ अरब सागर में गिरती हैं।
- वह क्षेत्र, जिसमें से होकर नदी बहती है और जल ग्रहण करती है, नदी का अपवाह क्षेत्र (Catchment Area) कहलाता है।
- प्रारंभिक भौतिक ढ़ाल पर बहने वाली नदी को अनुवर्ती नदी (Consequent Stream) कहते हैं।
- अनुवर्ती नदी में मिलने वाली सहायक नदी को परवर्ती नदी कहते हैं।
- ऑक्सीजन द्वारा शैलों पर होने वाले प्रभाव को ऑक्सीकरण कहते हैं।
- जब जल में घुला हुआ कार्बन चट्टानों पर प्रभाव डालता है तो उसे कार्बोनीकरण कहा जाता है।
- जब हाइड्रोजन जल में मिलकर चट्टानों का अपक्षय करती है तो इसे जलयोजन (Hydration) कहते हैं।
- भारत में सिन्धु नदी द्वारा सिन्धु गार्ज, सतलज नदी द्वारा शिपकी-ला गार्ज तथा ब्रह्मपुत्र नदी द्वारा कोरबा गार्ज का निर्माण हुआ है।
- सं. रा. अमेरिका में कोलोरेडो नदी के शुष्क पठार पर कोलोरेडो नदी द्वारा निर्मित कोलोरेडो कैनियन विश्व में सबसे अधिक प्रसिद्ध कैनियन है।
- भेड़ा गार्ज (भेड़ा घाट, जबलपुर) भारत का सबसे बड़ा संगमरमर का गार्ज है।
- भारत में कर्नाटक राज्य में शरावती नदी पर स्थित जोग या गरसोप्पा जल प्रपात 260 मीटर की ऊँचाई से गिरता है।
- हुंडरू जलप्रपात स्वर्णरेखा नदी पर स्थित है।
- कपिलधारा जलप्रपात मध्य प्रदेश के अनुपुर जिले में नर्मदा नदी पर स्थित है। शिवसमुद्रम जलप्रपात कर्नाटक के माण्ड्या जिले में कावेरी नदी पर अवस्थित है।

विश्व की प्रमुख झीलें नदियाँ

नाम	उद्गम स्थान	गिरने का स्थान	लम्बाई (किमी.
1. नील	विक्टोरिया झील (बुरुंडी)	भूमध्य सागर	6,690
2. अमेजन	लेंगो विलफेरो	अटलांटिक महासागर	6,296

37. डोन	टूला (रूस)	अजोब सागर	1,968
38. टिगरिस	टॉरस पर्वत (टर्की)	शत-अल-अरब	1,899

नदियों के किनारे बसे प्रमुख नगर

क.	नदी
1. बगदाद (इराक)	टाइग्रिस
2. बर्लिन (जर्मनी)	स्त्री
3. पर्थ (ऑस्ट्रेलिया)	स्वान
4. वारसा (पोलैण्ड)	विस्चुला
5. अस्वान (मिस्र)	नील
6. सेंट लुईस (अमेरिका)	मिसीसिपी
7. रोम (इटली)	टाइबर
8. लन्दन (इंग्लैंड)	टेम्स
9. पेरिस (फ्रांस)	सीन
10. मास्को (रूस)	मोस्कावा
11. प्राग (चेक गणराज्य)	विंतावा
12. बोन (जर्मनी)	राइन
13. खारतूम (सूडान)	नील
14. काहिरा (मिस्र)	नील
15. ब्यूनस आयर्स (अर्जेंटीना)	लाप्लाटा
16, अंकारा (टर्की)	किजिल
17. डुंडी (स्कॉटलैण्ड)	टे
18. लीवरपुल (इंग्लैंड)	मर्सी
19. कोलोन (जर्मनी)	राइन
20. माण्ट्रियल (कनाडा)	सेंट लॉरेंस
21. सिडनी (ऑस्ट्रेलिया)	डार्लिंग
22. बेलग्रेड (सर्बिया)	डेन्यूब
23. बुडापेस्ट (हंगरी)	डेन्यूब
24. वाशिंगटन (सं. रा. अ.)	पोटोमेक
25. वियाना (आस्ट्रिया)	डेन्यूब
26. टोकियो (जापान)	अराकावा
27. शंघाई (चीन)	यांगटिसीक्यांग
28. यांगून (म्यांमार)	इरावदी
29. ओटावा (कनाडा)	सेंट लॉरेंस
30. न्यूयॉर्क (सं. रा. अ.)	हडसन
31. मैंड्रिड (स्पेन)	मैंजेनसेस
32. लिस्बन (पुर्तगाल)	टंगस
33. डबलिन (आयरलैण्ड)	लीफे

नोट – प्रिय उम्मीदवारों, यहाँ हमने केवल SAMPLE ही दिया है, पूरा टॉपिक नही दिया है। यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल कीजिए या लिंक पर क्लिक करें। दोस्तों, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "RPSC RAS (PRE.)" की परीक्षा_ में पूर्ण संभव मदद करेंगे और आप "INFUSION NOTES" के साथ इस परीक्षा में जरूर सफल होंगे, धन्यवाद।

RAS Pre. 2021 की परीक्षा में हमारे नोट्स में से 74 प्रश्न आये थे, जबकि cutoff मात्र 64 प्रश्न पर गयी थी।

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 7014366728,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
REET (लेवल -I, 2)	2021	98 (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like REET, UPSC, SSC Etc.

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. 2021 – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

FREE SAMPLE

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें l

संपर्क करें- 7014366728, 8233195718, 9694804063, 8504091672

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/ras-pre-notes
PHONE NUMBER	+918504091672 9887809083 +918233195718 9694804063
TELEGRAM	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें	https://wa.link/6r99q8